ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

3

वर्ष-18 | अंक-11 | सितम्बर-I-2018 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 10.00

'भगवद् गीता : योर सतनव ऑन द रोल ऑफ लाइफ' विषय का सेमिनार बना आकर्षण

यू.के. में भी जागी गीता के रहस्य को जानने की जिज्ञासा

लेसीस्टर यू.के.। बह्माकुमारीज़ के हार्मनी हाउस में 'भगवद् गीताः योर सतनव ऑन द रोल ऑफ लाइफ' विषय पर आयोजित सेमिनार में नई और पुरानी दोनों ही जनरेशन में आने वाली चुनौतियों से निपटने में गीता शास्त्र कैसे हमारा मददगार है, इसके बारे में बताते हुए ब्र.कु. जयन्ती,द यूरोपियन डायरेक्टर ऑफ बह्माकुमारीज़ एंड एन.जी.ओ. रिप्रेज़ेन्टेटिव टू द युनाइटेड नेशन्स,जेनेवा ने कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता विभिन्न भाषाओं में अनुवादित और दुनिया भर में सुना व पढ़ा जाने वाला शास्त्र है। उन्होंने बताया कि भगवद् गीता में कुछ ऐसे सत्यों का उल्लेख किया गया है जो परम सत्य, सनातन एवं अविनाशी हैं, जिसका समय के साथ कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। गीता में महाभारत दृश्य के दौरान दर्शाया गया है कि भगवान अर्जुन को श्रीमत दे रहे हैं कि इस युद्ध में तुम्हारी क्या भूमिका होनी चाहिए। ये कोई हिन्दु शास्त्र नहीं है, क्योंकि विभिन्न लोगों के मतानुसार जब गीता गाई गई तब इस सृष्टि पर अहिंसक देवी देवता धर्म था, तो फिर ऐसा भयंकर युद्ध होना एक विचारणीय विषय है। इसमें दर्शाया गया कि युद्ध के समय एक ओर विप्रीत बुद्धि अक्षौणी सेना है, जिसकी भगवान से प्रीत नहीं है और दूसरी ओर प्रीत बुद्धि पाँच पाण्डव हैं, जिनकी परमात्मा से गहरी प्रीत जुड़ी हुई है। अगर आज के विश्व पर भी एक नज़र डालें तो हम पायेंगे कि अरबों की संख्या में लोग हैं जो कहते हैं कि वे अपने अपने धर्म में विश्वास रखते हैं, लेकिन उनमें से ही बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमें सिर्फ परमात्म निर्देशों पर ही चलना है, जिनका धर्म से नहीं, परमात्मा से प्रेम है। तो यहाँ एक प्रश्न उठता है कि गीता में वर्णित महाभारत युद्ध हिंसक था या अहिंसक। उन्होंने बताया कि गीता में काम वासना को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया गया है और अंत में ये भी कहा गया है कि नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। अर्थात् मोह को नष्ट करो और स्मृति स्वरूप बन जाओ। जब अर्जुन को ये ज्ञान स्पष्ट हो जाता है तो वो कहता है कि मैंने मोह पर विजय प्राप्त कर ली है। इससे ये सिद्ध होता है कि यहाँ कोई मनुष्य को शत्रु नहीं बताया जा रहा है। बल्कि भगवान कहते हैं कि मन ही तुम्हारा मित्र है और मन ही तुम्हारा शत्रु तथा साथ ही वे मनमनाभव का मंत्र भी देते हैं कि अपने मन से मुझे याद करो। परमात्मा को याद करने के दौरान यदि हमारा मन इधर उधर भटक रहा है तो उस समय मन हमारा शत्रु बन जाता है, और जिस समय वो परमात्म याद में हमारा सहयोगी है, उस समय वो हमारा मित्र बन जाता है। तो जब हम इस बारे में समझदारी के साथ सोचेंगे तो हमें समझ आयेगा कि ये बाहर में होने वाला युद्ध नहीं है, बल्कि ये तो आंतरिक युद्ध है जो हमारे भीतर चलती रहती है। तो जब परमात्मा द्वारा इस शब्द का उच्चारण होता है कि 'मारो', तो उस समय परमात्मा का आशय इस बात से होता है कि स्वयं को आत्मा समझो और अपने देह तथा दैहिक सम्बंधियों को भूल जाओ, तब परमात्मा को याद करना अति सहज हो जायेगा। इससे स्पष्ट होता है कि परमात्मा हमें लोगों का मारना नहीं या हिंसा करना नहीं सिखाते पर हमारे मन के विकृत विचारों द्वारा मिलने वाले दुःखों को भूलने वाला मनोयुद्ध सिखाते हैं, तो ये कोई हिंसक नहीं, पर अहिंसक मनोयुद्ध है। इस बात से सिर्फ बह्माकुमारीज़ ही सहमत नहीं है, बल्कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णण जी का भी यही मत रहा।

गीता का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए युरोप में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. जयंती। ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के प्रबुद्धजन।

दिल्ली। राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा, निदेशिका,ओ.आर.सी. तथा ब्र.कु. आशा,क्षेत्रीय संचालिका,खानपुर।

देश भर से व्यापार एवं उद्योग से जुड़े लोग हुए त्रिदिवसीय सम्मेलन में शरीक

व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से बढ़ता तनाव

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार व उद्योग सेवा प्रभाग द्वारा उद्योगपतियों के लिए आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए यू.एस.ए. सेनफ्रांसिसको से आए गूगल प्रबंध निदेशक किरणमणि ने कहा कि व्यापारिक क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा तनाव का कारण बन गई है। मूल्यों के अभाव में बढ़ता स्वार्थ व्यापारिक सम्बंधों में कड़वाहट घोल रहा है। साधन व धन होते हुए भी अशांति बढ़ रही है। ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि सत्यता व ईमानदारी के अभाव में व्यापारिक सिद्धान्तों से समझौता करने के बाद ही पारस्परिक सम्बंधों में कड़वाहट आती है। इसके लिए सम्बंध-सम्पर्क में पारदर्शिता होना ज़रूरी है। जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि मानव स्वयं में एक शक्ति का पुंज है। अपनी अंतर्निहित शक्तियों की पूंजी को पहचान कर उसे कार्य में लगाने से किसी भी क्षेत्र में सुगम तरीके से कामयाबी अर्जित की जा सकती है।

शिकागो से आए वैश्विक सकारात्मक चिंतक पीयूष सिंघानिया ने कहा कि आध्यात्मिकता मन को सब प्रकार के बोझ से मुक्त कर जीवन को खुशहाल बनाती है। फिल्म अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की माता मधु चोपड़ा ने कहा कि जीवन में पवित्रता को अपनाने से ही सर्व समस्याओं का हल संभव है।

प्रभाग उपाध्यक्ष मदन मोहन शर्मा ने कहा कि जीवन में ईश्वरीय समर्पण व सच्ची लगन से कोई भी कार्य किया जाता है तो उसमें सफलता शत् प्रतिशत मिलती है।

दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र, प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मदन मोहन शर्मा, मधु चोपड़ा, ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, गूगल प्रबंध निदेशक किरण मणि,यू.एस.ए., ब्र.कु. लालजी पटेल, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. मोहन पटेल।

भारत आध्यात्मिक मूल्यों की धरोहर

रायपुर छ.ग.। छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल के महाप्रबंधक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ सहित कई राज्य पर्यटन के लिए देश के खूबसूरत क्षेत्र हैं। ये सभी प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न हैं। ज़रूरत सिर्फ इन क्षेत्रों का विकास कर लोगों के सम्मुख लाने की है। डॉ. संजय बह्माकुमारीज़ के शिपिंग एविएशन एंड टूरिज़्म प्रभाग द्वारा आयोजित 'ट्रेन द ट्रेनर्स' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बह्माकुमारी संस्थान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान पर्यटन के माध्यम से लोगों में परस्पर प्रेम और भाईचारा बढ़ाने का सराहनीय कार्य कर रहा है। मुम्बई से आईं शिपिंग एंड एविएशन विंग की समन्वयक ब्र.कु. प्रशान्ति ने कहा कि भारत की प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्जीवित कर देश के गौरव को वापस लौटाना ही इस विंग का मुख्य उद्देश्य है। संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि मन के भावों को बदलने के लिए पर्यटन बहुत ही अच्छा माध्यम है। भौगोलिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ सचमुच ही सुंदर प्रदेश है। उन्होंने कहा कि यहाँ के पर्यटन स्थल मन को लुभाते हैं। लेकिन इनका प्रचार प्रसार और ज़्यादा करने की ज़रूरत है।

ब्रह्ममुहूर्त में उठने की परंपरा क्यों?

रात्रि के अंतिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्व बताया है। उनके अनुसार यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घंटा) पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिए। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है।

ब्रह्म का मतलब परम तत्व,जहाँ परमात्मा निवास करते हैं। मुहूर्त यानी अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात् 4 से 5:30 बजे का समय जिसे ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है। ब्रह्म मुहूर्त की निद्रा पुण्य का नाश करने वाली होती है। सिख धर्म में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है - अमृतवेला, और ब्रह्माकुमारीज़ में तो अमृतवेले उठकर परमात्म शक्ति के साथ जुड़ने की साधना करते हैं। उनका दृढ़ मानना है कि परमात्मा से मिलन अमृतवेले ही होता है। इसके द्वारा इस समय का महत्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य का मन शांत और तन पवित्र होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल होने का यह ऐसा फॉर्मला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता। केवल आलस्य छोड़ने की ज़रूरत है।

- ब्र.कु. गंगाधर

पौराणिक महत्व : वाल्मीकि रामायण के मुताबिक माता सीता को ढूंढ़ते हुए हनुमान ब्रह्म मुहूर्त में ही अशोक वाटिका पहुंचे। जहां उन्होंने वेद व यज्ञ के ज्ञाताओं के मंत्र उच्चारण की आवाज़ सुनी।

शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है : ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुंदरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुंदर हो जाता है।

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति : ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में पशु-पक्षी जाग जाते हैं। उनका मधुर कलरव शुरू हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बांग देने लगते हैं। एक तरह से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए।

इसलिए मिलती है सफलता व समृद्धि : आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यही कारण है कि इस समय बहने वाली वायु को अमृत तुल्य कहा गया है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है, क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताज़गी बनी रहती है। प्रमुख मंदिरों के पट भी ब्रह्म मुहूर्त में खोल दिए जाते हैं तथा भगवान का श्रृंगार व पूजन भी ब्रह्म मुहूर्त में किए जाने का विधान है।

ब्रह्म मुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज़ इस शुभ घड़ी में जागना शुरू करें तो बेहतर नतीजे मिलेंगे। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और समृद्ध होता है, क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता है। कारण, वह जो काम करता है उसमें उसकी प्रगति होती है। विद्यार्थी परिक्षा में सफल रहता है। जॉब करने वाले से बॉस खुश रहता है। बिज़नेसमैन अच्छी कमाई कर सकता है। जबकि बीमार आदमी की आय तो प्रभावित होती ही है, उल्टे खर्च बढ़ने लगता है। सफलता उसी के कदम चूमती है जो समय का सदुपयोग करे और स्वस्थ रहे। अतः स्वस्थ और सफल रहना है तो ब्रह्म मुहूर्त में ज़रूर उठें।

वेदों में भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने का महत्व और उससे होने वाले लाभ का उल्लेख किया गया है।

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्वा प्रतिगृह्यनिधत्तो।
तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः।। ऋग्वेद 1/ 125/1

अर्थात् सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं गंवाते। सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सुखी, ताकतवाला और दीर्घायु होता है।

यद्य सूर उदितो नागा मित्रो र्यमा। सुवाति सविता भगः।। सामवेद 35

अर्थात् व्यक्ति को सुबह सूर्योदय से पहले शौच व स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद भगवान की पूजा अर्चना करनी चाहिए। इस समय की शुद्ध व निर्मल हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

उद्यन्तसूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे। अर्थर्ववेद 7/16/2

अर्थात् सूरज उगने के बाद भी जो नहीं उठते या जागते उनका तेज खत्म हो जाता है।

व्यवहारिक महत्व: व्यवहारिक रूप से अच्छी सेहत, ताजगी और ऊर्जा पाने के लिए ब्रह्म मुहूर्त बेहतर समय है। क्योंकि रात की नींद के बाद पिछले दिन की शारीरिक और मानसिक थकान उतर जाने पर दिमाग शांत और स्थिर रहता है। वातावरण और हवा भी स्वच्छ होती है। ऐसे में देव उपासना, ध्यान, योग, पूजा, तन, मन और बुद्धि को पुष्ट करते हैं।

निश्चिंत स्थिति बनाने के लिए निश्चयबुद्धि और साक्षीदृष्टा बनो

बाबा की जो हमारे लिए उम्मीदें हैं वो सब पूरी कर रहे हैं, ऐसा मैं समझती हूँ। कैसी भी स्थिति हो बाबा के सामने बैठे हैं तो शांत हैं। मीठे बाबा के बोल हैं कि सदा ही समझो मैं महारथी हूँ। महारथी अशरीरी स्थिति में रहता है। यह महारथी का काम है, घोड़ेसवार का नहीं। प्यादा तो बेचारा है, उसको कोई पोज़ीशन चाहिए। वह सोचेगा कि ऐसे ही थोड़े ही चलना है, कुछ तो पद पोज़ीशन होनी चाहिए।

करनकरावनहार बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं, यह फीलिंग निमित्त भाव पैदा करती है। फिर जो शक्तियाँ हैं वो काम करती हैं, सर्वशक्तिवान कराता है। करावनहार सर्वशक्तिवान है, आठ शक्तियाँ काम कर रही हैं। मैं कौन हूँ? देह, सम्बन्ध से न्यारी प्रभु की प्यारी।

शरीर कैसा भी है, आप समझ सकते हो पर शरीर से आत्मा और बाबा करावनहार करा रहा है। सारा विश्व बाबा ने अपने हाथों में ले लिया है, साक्षी हो करके देख रहे हैं। सभी हमारे बहन-भाई इस फीलिंग में हैं, इस स्थिति में हैं कि करावनहार करा रहा है, हम साक्षी हो करके देखते हैं, क्योंकि ड्रामा एक्यूरेट चल रहा है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा और ड्रामा में हरेक का पार्ट न्यारा है, साक्षी हो करके देखो तो बहुत मज़ा आता है। दो एक जैसे नहीं हो सकते हैं, हरेक न्यारे हैं, हरेक का पार्ट विशेष है। दृष्टि, वृत्ति और अन्दर की स्थिति हमारी कैसी हो, वो समझ गये होंगे। बाबा ने अव्यक्त पार्ट के लिए गुल्ज़ार दादी को निमित्त बनाया।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

कितना वन्डरफुल, अव्यक्त बाबा की कमाल है जो सारे विश्व को अंगुली पर नचा रहा है। आप सबको देख दिल कहता है शुक्रिया बाबा आपका। जो कहाँ-कहाँ से चुन करके गले की माला बनाया है, गोद बिठाया है, गले लगाया है, अभी पलकों पर बिठाके लेके जा रहा है, ऐसी फीलिंग है ना। इसमें शक की बात नहीं, सारी कमाल है निश्चय की, इसलिए निश्चिंत हैं। ऐसा कोई है जिसको कोई फिकर हो? कोई स्थान का, कोई स्टूडेंट का, कोई एरिया का, कोई रीज़न का...? स्वधर्म हमारा शांत है। बाबा मेरा सर्वशक्तिवान है, हम सब कौन हैं? मैं सब साक्षी हो करके देखती हूँ... तो कितना वन्डर लगता है, बाबा ने कैसे इतने सब बच्चों को चुना है। फिर कितना न्यारे-प्यारे बनने की बाबा ने शक्ति दी है। दुनिया देख रही है, यह कौन हैं। मैं समझती हूँ अभी दुनिया में आप कहीं पर भी हैं, यहाँ तो सब एक बाबा के घर में बैठे हैं। क्या प्रभु लीला है! अच्छा है। भारत में गाते हैं प्रभु तेरी लीला अपरमअपार है। भगवान ने हमें बहुत भाग्यवान बनाया है। अभी जितना चाहो अपना भाग्य बनाओ, सेवा है याद में रहना। अगर याद में नहीं रहेंगे तो सेवा क्या करेंगे! तो दिल से है - याद, दृष्टि से है - सेवा, अन्दर की है - स्थिति। जब हम एक दो को इस नज़र से देखते हैं, तो कितना अच्छा लगता है, खींच होती है।

विशेषता देखो, कमज़ोरियों को नहीं

जिसकी रचना इतनी सुंदर, वो रचता कितना सुन्दर होगा! तो हम सभी को बाबा ने सुन्दर बनाया है योग्य बनाया है, सहजयोगी बनाया है, कर्मयोगी बनाया है। तो हमारे इस ब्राह्मण कुल को, रचना को देख करके रचता बाप की ही महिमा याद आती है। आप सभी भी इसी लक्ष्य से चल रहे हैं कि एक बाबा दूसरा न कोई, यह पक्का है ना! एक बाबा दूसरा न कोई, लेकिन इतना बड़ा परिवार है तो दूसरा तो है। परिवार को भी ज़रूर देखना ही है लेकिन बाबा कहते हैं कि फॉलो करो फादर को। फॉलो मदर फादर कहा जाता है। बाकी सिस्टर्स-ब्रदर्स जो हैं, वो हैं बहुत बढ़िया लेकिन उनको फॉलो नहीं करना है। उन्हों में एक-एक विशेषता ज़रूर देखनी है और आजकल बाबा हमको इशारा दे रहा है कि हर एक में शुभ भावना, शुभ कामना रखो। परिवार में सब एक जैसे तो नहीं होते हैं, थोड़ा-बहुत फर्क तो होता है, लेकिन उसमें भी हम शुभ भावना, शुभ कामना रखें क्योंकि बाबा की आज्ञा है। कई कहते हैं कि कई बार किसकी स्थिति अच्छी नहीं है, थोड़ा कुछ नीचे ऊपर कर लेता है फिर भी हम उसमें शुभ भावना कैसे रखें? क्योंकि उसकी गलती हमको दिखाई दे रही है। नियम है, मनुष्य आत्मा अच्छी चीज़ ही देखना पसन्द करती है, बुरी चीज़ देखना पसन्द नहीं करती। तो बाबा भी कहते हैं कि चाहे मेरा लास्ट बच्चा है, 16 हज़ार की माला का लास्ट दाना है, तो भी बाबा का उस लास्ट दाने से भी प्यार है ना। अगर बाबा का प्यार नहीं होता, तो बाबा मेरा बच्चा क्यों कहता? मेरा बनाया क्यों?

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा की च्वाइस कोई गलत तो नहीं हो सकती! बाबा ने जब उसको मेरा बनाया तो हम भी क्या कहेंगे मेरा भाई है, मेरी बहन है। कुछ भी हो लेकिन है तो मेरी बहन, मेरा भाई। तो उसमें शुभ भावना तभी उत्पन्न हो सकती है जब हम कोई न कोई विशेषता उसकी देखें।

क्योंकि बाबा ने कहा है कि ऐसा कोई भी मेरा बच्चा नहीं है जिसमें एक भी विशेषता नहीं है, चलो 99 वे गलतियाँ हों भी, लेकिन एक विशेषता उसमें ज़रूर है। जिस विशेषता को ही बाबा ने देखा और उसमें शुभ भावना रखी, आजकल जितने भी बड़े-बड़े वी.वी.आई.पीज़ हैं उनसे तो भाग्यवान हैं क्योंकि साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान तो लिया। वो नहीं पहचान सकते लेकिन लास्ट दाने ने भी कहा मेरा बाबा। पहचान करके तो बाबा शब्द बोला। उनकी तीसरी आँख इतनी तो तेज़ है जो भगवान को साधारण रूप में पहचान तो लिया। तो यह विशेषता कोई कम थोड़े ही है! तो बाबा कहते उनकी विशेषता है और हमारी नज़र अगर उनकी विशेषता पर ही जाये, कमज़ोरी के ऊपर नहीं जाये तो कम ज़ोर पर दया आयेगी, उसे सहयोग देने की भावना जागृत होगी। इसको सहारा देना चाहिए, ऐसे लगता है। तो आप सभी विशेष आत्मा हो, यह जानते हो? चाहे कोई नया एक सप्ताह का भी हो लेकिन निश्चय से मेरा बाबा कहा तो वो कोटों में कोई आत्मा तो हो ही गई। हम तो कुछ नहीं है, बड़े-बड़े हैं, भल बड़े का रिगार्ड रखना आवश्यक है, बड़े को बड़ा समझना भी आवश्यक है लेकिन दिलशिकस्त नहीं होना।

हमारा संसार, बाबा और बाबा का परिवार

प्यारा बाबा कहता कि आप सब मीठे बच्चे गृहस्थी नहीं ट्रस्टी हो। अगर इनसे भी परे देखो तो ट्रस्टी भी नहीं, हम तो सब छोटे बच्चे हैं। बच्चे को गृहस्थी नहीं कहेंगे। हम बच्चे हैं बस। हमारा संसार एक बाबा है। माँ भी वही है, पिता भी वही है, बंधु, सखा, बेटा, देवों का देव सब कुछ वही है। इसलिए हमारा सारा संसार एक में है। एक हमारा संसार है। एक में ही हमारा संसार है। जब हमारा एक ही संसार है, एक में सारा संसार है तो हम संसारी नहीं हैं, माना हम दुनियावी नहीं हैं। दुनिया की रीति रसम से परे हैं। दुनिया की रीति रसम अपनी है, उनका बहुत बड़ा संसार है। हमारा संसार तो एक बिंदु है। हम उस संसार से अलग हैं। हमारा संसार बाबा और बाबा का परिवार है। हमारी प्रीत भी नई है, रीत भी नई है क्योंकि हमारा मीत भी नया है। जिसका हम सदैव गीत गाते हैं। हम संसारी नहीं माना गृहस्थी नहीं। गृहस्थी माना बहू बेटे, धोता, पोता... कितनी बड़ी दुनिया होती। हमारा तो एक बाप, एक माँ है, हम सब बच्चे हैं। इसलिए एक मात-पिता के हम सब बच्चे हैं हमारे को कोई सासू, ससुर, देवर, जेठ नहीं, एक से सारे रिश्ते हैं, सब रिश्ते बाबा ने तोड़ डाले। बाकी निमित्त कर्मबन्धन के रिश्ते हैं। बाबा की पहली-पहली श्रीमत व डायरेक्शन है - देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो। उसी अनुसार हम अकेली आत्मा हो गई। इस देह का भी बहुत बड़ा अपना संसार है - इसको सम्भालना पड़ता, खिलाना-पिलाना पड़ता...परन्तु बाबा कहते इससे भी निवृत्त बनो। इसे भी भूलो। यही हमारी पढ़ाई है। इस देह के भान को भी मिटाना है। खुद का यह जो शरीर है, यह प्रवृत्ति भी हमें नीचे खींचती है, हमें तो इसे भी परिवर्तन कर देही बनना है। यही हमारी पढ़ाई व रात दिन का अभ्यास हो।

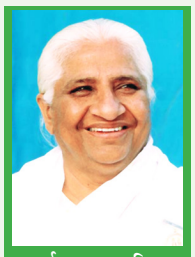

पूर्व मुख्य प्रशासिका

चाइना। सर्व अफ्रीका रिट्रीट सेंटर में अभिभावकों एवं बच्चों के लिए आयोजित रिट्रीट में मार्गदर्शन करने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. वेदांती,नैरोबी,केन्या, ब्र.कु. एलिजाबेथ, ब्रदर क्यूरी, ब्र.कु. दीप्ति तथा अन्य।

शांतिवन-मधुबन पावर हाउस। ब्रह्माकुमारीज़ के 'इंडिया वन' सोलार प्लांट के निकट वन मेगा वाट के नये पी.वी. सोलार प्लांट का भूमि पूजन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी तथा राजयोगिनी ईशू दादी। साथ हैं ब्र.कु. ललित, ब्र.कु. सुधीर, ब्र.कु. जयसिम्हा, मनीष कुमार,डायरेक्टर,संहिता टेक्नोलॉजी तथा अन्य।

गणपति बाप्पा मोरया, पुढ़च्या वर्षी लवकर या...

भारत में काफी बड़ी संख्या में लोग गणपति की पूजा अर्चना व साधना करते हैं और अन्य बहुत से लोग जिनके वे इष्ट नहीं हैं, वे भी मुहूर्त अथवा शुभ अवसरों पर सभी धार्मिक आयोजनों का प्रारम्भ गणपति की ही स्तुति से करते हैं। लाखों करोड़ों व्यापारी अपने बहीखातों के प्रारंभ में अथवा अपने व्यापार की गद्दी के निकट स्थल पर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करते हैं। जिसे वे गणपति का सूचक, शुभ तथा लाभप्रद मानते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोग गणपति को सभी देवताओं में प्रथम स्तुत्य मानते हुए अपने कार्य की निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति के लिए अर्चना करते हैं। तब तो हर साल कहते हैं कि 'गणपति बाप्पा मोरया, पुढ़च्या वर्षी लवकर या...।' आप अगर गणपति को ध्यान से देखेंगे तो उनके हाथ, उनका मुख, उनकी हर इंद्रियां कुछ अलंकार लिये हुए हैं। कभी आपने सोचा है कि ऐसी आकृति वाला कोई मनुष्य हो सकता है। तो आइये, हम जानें इस विचित्र के चरित्र का मर्म।

हाथी का सिर

मनुष्य को जितने पशु-पक्षियों का ज्ञान है, उनमें से हाथी ऐसा जीव है जिसे बुद्धिमान माना जाता है। हाथी का सिर विशाल होता है और यह मान्यता प्रचलित है कि हाथी की स्मृति तेज़ होती है। वो अपने माहौल को भली-भांति जानता है और उसे परख सकता है। इसलिए अंग्रेजी में कहावत है 'ऐेज़ वाइज़ ऐज़ ऐन एलिफैंट एंड ऐज़ फेथफुल ऐज़ एलीफैंट। जिस मनुष्य को आत्मा और परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान ज्ञात हो और जिसे सृष्टि के आदि मध्य अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में विशाल बुद्धि कहा जाता है। और ऐसा विशाल बुद्धि व्यक्ति जिसे परमपिता परमात्मा की स्मृति बनी रहे और जो परमात्मा के प्रति निश्चयवान एवं श्रद्धावान भी हो, उसके सिर को भी हाथी के सिर के रूप में चित्रित करना युक्तियुक्त है।

हाथी की सूंड (तुण्ड)

आपने हाथी की सिर की बात तो समझ ली, पर शिव पुत्र को सूंड क्यों दी गई है? अगर सूंड की विशेषताओं पर ध्यान देंगे तो देखेंगे कि ऐसा करना तो ठीक है। आपको मालूम ही होगा कि हाथी की सूंड इतनी मज़बूत और शक्तिशाली होती है कि वो वृक्ष को भी उखाड़कर सूंड में लपेटकर ऊपर उठा लेता है, अर्थात् वह बुलडोज़र और क्रैन का कार्य एक साथ कर सकता है। वो सिर्फ वृक्ष जैसी स्थूल चीज़ों को ही ग्रहण नहीं करता, बल्कि सुई जैसी सूक्ष्म चीज़ को भी उठा सकता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञानवान व्यक्ति भी अपनी स्थूल आदतों को जड़ से उखाड़कर फेंकने में सक्षम है तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी धारण करने के लिए और दूसरों को सम्मान स्नेह तथा आदर देने में कुशल होता है। अपने संस्कारों को मूल से पकड़कर फेंकने के लिए हाथी अथवा उसके सूंड जैसी आध्यात्मिक शक्ति चाहिए। सूंड भी ज्ञानवान मनुष्य की कुछेक विशेषताओं का प्रतीक है।

गज कर्ण

हाथी के कान तो पंखे जितने बड़े होते हैं। भला किसी ज्ञानवान को इतने बड़े कान लेने की क्या आवश्यकता है? कान को तो मुख्य ज्ञानेन्द्री माना गया है। जब हम किसी को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बात बताते हैं, तो कहते हैं कि कान खोलकर सुनो। गुरू भी जब अपने शिष्य को मंत्र देता है तो उसके कान ही में उच्चारण करता है। भगवान ने जब गीता ज्ञान दिया, तब अर्जुन ने कानों द्वारा ही उसे सुना। अतः बड़े बड़े कान ज्ञान श्रवण का प्रतीक है।

हाथी की आँखें

गणपति की आँखों को हाथी के समान चित्रित करने के पीछे गहरा

राज़ है। हाथी के नेत्रों की यह विशेषता है कि उसे छोटी चीज़ भी बड़ी दिखाई देती है। जैसे उल्लू की आँखों की एक अपनी विशेषता यह है कि उसकी आँखों की पुतलियां सूर्य की रोशनी में चूंधिया हो जाती हैं, इसलिए वो उसे बंद कर लेता है। बिल्ली की आँखों की विशेषता है कि वो रात्रि के अंधेरे में भी देखने में सक्षम रहती है। वैसे ही हाथी के आँखों की ये विशेषता है कि छोटी चीज़ उसे बड़ी दिखाई देती है। अगर उसे छोटी दिखाई देती, तो वो सबको अपने पांव के नीचे रौंदता हुआ चला जाता। इसी तरह ज्ञानवान व्यक्ति का भ अपना एक विशेष गुण होता है कि वो छोटी में भी बड़ाई देखता है। इसलिए हरेक की महानता उसके सामने उभर आती है। इसलिए वो हरेक को आदर देता है। अत: ज्ञान के नेत्रों को इस गुण के कारण हाथी के नेत्रों के समान चित्रित करना ठीक ही तो है।

गजवदन

हाथी के कान, नाक, सूंड बड़े बड़े हैं, और उसे स्वयं इतना बड़ा दिखाते हैं, जिसे देख कोई विपरीत व्यक्ति घबरा जाता है। अपने बुरे कर्मों के कारण कोई पकड़ा जाता है तो लोग उसके बारे में कहते हैं कि 'उसका तो मुख छोटा हो गया है।' जब कोई कमज़ोर हो जाता है तब भी उसके बारे में कहते हैं कि इसका तो मुख ही आधा हो गया है। इस प्रकार बड़ा मुख अच्छे कर्मों के कारण, निर्भयता और आत्मिक शक्ति के कारण सामार्थ्य का प्रतीक है।

एक दंत

हाथी के बाहर निकले हुए दो दाँत होते हैं, जो दिखाने के होते हैं। इस संसार में दूसरे लोगों के द्वारा थोड़ा सा भी विघ्न न पड़े, उसके लिए यह ख्याल में रखकर चलना पड़ता है ताकि वो ऐसा ही न समझ ले कि हम उसके विघ्न डालने पर कोई कदम हीं नहीं उठायेंगे। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे पास भी साधन, सम्पर्क और सामर्थ्य है, ऐसा भी कुछ रूप रखना होता है। अपने बचाव के लिए दो दाँत तो न सही, एक दात तो हमारे पास भी है, लोगों को यह मालूम रहने से वे उल्टा कदम उठाने से टल जाते हैं। यह एक दाँत किसी को हानि पहुंचाने के लिए नहीं है, ना ही दूसरों को भयभीत करने की रीति का प्रतीक है, बल्कि यह एक नीति है। ये सूझ-बूझ और दूरदर्शिता का परिचायक है।

एक हाथ में कुल्हाड़ा

गणपति की चार भुजाएं दिखाई जाती हैं, उनमें से एक हाथ में कुल्हाड़ा दिखाया जाता है। कुल्हाड़ा तो काटने का साधन है। ज्ञानवान व्यक्ति में मोह ममता के बंधन काटने और पुराने संस्कारों का मूलोच्छेदन करने की क्षमता होती है। उसी का प्रतीक ये कुल्हाड़ा है।

दूसरे हाथ में बंधन (रस्सी)

गणपति के दूसरे हाथ में बंधन दिखाया जाता है, जो इस बात का प्रतीक है कि दैहिक बंधन को तो ज्ञान रूपी कुल्हाड़े से काटना है, लेकिन स्वयं को दिव्य नियमों रूपी बंधन में बांधना भी है। यह शुभ बंधन है। जिसमें मनुष्य अपनी ही भलाई के लिए बंधना चाहता है। वास्तव में इसे बंधन नहीं, सम्बन्ध कहना चाहिए।

मोदक

मोदक शब्द लड्डू का भी वाचक है और खुशी प्रदान करने वाली वस्तु का भी नाम है। लड्डू बनाने के लिए चने को पीसना, भिगाना, भूनना पड़ता है, तब कहीं जाकर वह प्रिय पदार्थ बनता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति को भी अनेक कठिनाइयों, संकटों, दुसवारियों इत्यादि से गुज़रना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसे तपस्या करनी पड़ती है। जीते जी मरना पड़ता है। और इससे उसमें अधिकाधिक मिठास व ज्ञान का रस भरता है। तब वह स्वयं भी सदा मुदित रहता है और दूसरों को भी मुदित करता है। इस प्रकार हाथ में मोदक का होना, ज्ञान निष्ठा, ज्ञान रस से सिक्त स्थिति का प्रतीक है, और ज्ञान द्वारा प्राप्त मुदित अवस्था का परिचायक है।

वरद मुद्रा

गणपति का एक हाथ सदा वरद मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। क्योंकि जो ज्ञानवान व्यक्ति पुर्वोक्त लक्षणों को धारण कर लेता है, वो दूसरों को भी निर्भयता और शांति का वरदान देने के सामर्थ्य वाला हो जाता है। उसकी स्थिति ऐसी महान हो जाती है कि वह अपनी शुभ मंसा से दूसरों को आशीष प्रदान कर सकता है। अतः वरद मुद्रा वाला हाथ भी ज्ञाननिष्ठ स्थिति की पराकाष्ठा का प्रतीक है।

पायें रॉयल रिश्वतों से राहत

देखिए बाबू जी, मैं आपके लिए धोती कुर्ता लाया हूँ और माँ की खातिर बनारसी साड़ी। मुनमुन तुम्हारे लिए खिलौने मेरे पास हैं और तुम्हारी मम्मी के लिए मेकअप किट भी - घर में घुसते ही राकेश ने खुशी भरी आवाज़ के साथ सबको पुकारा।

लेकिन ये सब चीज़ें तो काफी महंगी हैं। इतना पैसा क्यों खर्च किया? रिया ने पति राकेश को धीरे से कहा।

अरे रिया! इसमें खर्च की क्या बात है। तुम सबकी खुशियों से कब तक समझौता करूं। ये लो, इसे संभालकर अलमारी में रख दो। पूरे एक लाख रुपये हैं। नोटों का बंडल रिया को थमाते हुए राकेश ने कहा।

परेशान क्यों होती हो। कुछ खास नहीं किया है। बस एक बिल्डर की फाइल पास कर दी और उसने खुश होकर छोटा सा तोहफा दे दिया। राकेश की बात सुनकर बाबू जी ने बगैर कुछ कहे धोती कुर्ते का पैकेट उसके सामने फेंक दिया। रिया ने मुनमुन से खिलौने छीने और मेकअप किट के साथ राकेश के पैरों की तरफ उछाल दिया।

ये क्या कर रहे हो तुम लोग? राकेश ने गुस्से के साथ कहा। बहिष्कार बहिष्कार बहिष्कार!

बेटा तुम शायद भूल गए कि हमारे घर में रिश्वत के लिए कोई जगह नहीं है। खैर, तुम्हारी कोई गलती नहीं। शायद मेरी परवरिश में ही कोई कमी रह गई, जिसकी झलक तुमने मुझे दिखा दी है। ये कहकर बाबू जी चुप हुए और पूरे घर में सन्नाटा छा गया। अब राकेश की आँखों से आंसू बह रहे थे।

उपरोक्त घटना के बारे में गहराई से सोचा, देखा तो ख्याल चला, अरे, ऐसा तो एक बार मेरे साथ भी हुआ है। एक बार मैं पढ़ाई के लिए बाहर रहता था। जब छुट्टियों में घर लौटा तो माँ के लिए, छोटी बहन गुड़िया के लिए सोचा तोहफा ले जाऊँ। जो बाज़ार से लेकर आया। मैं घर पहुँचा और उसको बड़े प्यार से दिया और वो खुश हो गई। छुट्टियां समाप्त होने पर मैं वापस पढ़ाई के लिए बाहर गया। पुनः एक साल बाद छुट्टियों में घर जाने का दिन आया। फिर सोचा कि माँ और बहन के लिए प्यारा सा गिफ्ट ले जाऊँ। परीक्षा खत्म होते ही मेरी ट्रेन थी। समय के अभाव के कारण मैंने बाजू वाले दुकान से छोटी छोटी गिफ्ट ली, ट्रेन पकड़ी और घर पहुँचा। मैंने बड़े प्यार से गुड़िया के लिए छोटा सा खिलौना दिया और मम्मी को भी गिफ्ट दिया। दोनों ही देने पर उनके चेहरे पर वो रौनक, वो खुशी न दिखी जो मैंने पहली छुट्टियों में देखी थी। उनके चेहरे के हाव भाव ने मेरे शक्ल को भी सिकुड़ा दिया। मेरे मन का मूड ही बदल गया। फिर मैं जैसे तैसे तैयार हुआ और भोजन किया। पर वो विचार और परिदृश्य मन को बारंबार विचलित करता रहा।

हमारी व्यवहारिकता सिर्फ वस्तुओं के आदान प्रदान पर ही निर्भर रहती है। जहाँ स्व उसूलों का कहीं दूर दूर तक नाता नहीं रहता। तो क्या यही खुशी बांटने का सही पैमाना है? सोचने पर लगता है कि बाहरी तौर पर तो करना ठीक है, लेकिन हमारी आत्मा की भीतरी व्यवस्था को वो खोखला करता है, कमज़ोर करता है।

खुशी और नाखुशी का पैमाना

रात को सोते समय मन में एक क्लिक हुआ कि क्या गिफ्ट की कीमत के आकार पर ही उनकी खुशी निर्भर है? क्या मेरे शुद्ध प्यार और सम्बन्धों की कोई वैल्यू नहीं? खुशी और नाखुशी का पैमाना क्या सिर्फ वस्तु के आकार पर ही निर्भर है? बहुत सोचने पर ये बात समझ में आई कि हम वास्तव में खुशी दे नहीं रहे होते हैं, पर हमें उस समय पता नहीं चलता कि खुश करने के साथ नाखुशी का भी बीज बो रहे होते हैं।

रॉयल रूप लेती रिश्वत

आज हम समाज की व्यवस्थाओं में भी देखें, तो यही हो रहा है। हम बिना सोचे समझे करते भी जा रहे हैं। जैसे किसी की शादी है तो हम उसको सौगात देते हैं। फिर वही प्रसंग मेरे घर में भी होता है तो वो भी गिफ्ट लेकर आता है। हम प्रसंग पूरा होने के बाद उस गिफ्ट को देखते हैं। ये देखने के पीछे हमारा भाव होता है कि मैंने इतनी कीमत की गिफ्ट उसको दी थी, तो उसने कि तने की दी? हमारी व्यवहारिकता सिर्फ वस्तुओं के आदान प्रदान पर ही निर्भर रहती है। जहाँ स्व उसूलों का कहीं दूर दूर तक नाता नहीं रहता। तो क्या यही खुशी बांटने का सही पैमाना है? सोचने पर लगता है कि बाहरी तौर पर तो करना ठीक है, लेकिन हमारी आत्मा की भीतरी व्यवस्था को वो खोखला करता है, कमज़ोर करता है। ऐसे में हम चाहते हैं कि हम भी खुश रहें, खुशियां बांटें। पर ऐसा हो नहीं रहा होता। तो हम उसूलों से समझौता करके कोई भी कर्म करते हैं, तो उससे हमें कोई भी खुशी मिल ही नहीं सकती। ना खुश कर सकते और ना रह सकते। बातों बातों में हम कहते हैं कि नेकी कर दरिया में डाल। पर ऐसा हो नहीं रहा है, और ही हम उस चंगुल में फंसते जा रहे हैं। देने के साथ लेने की भावना प्रबल होती जा रही है। तो कहीं न कहीं हमें इस परंपरा के बारे में सोचना होगा, जड़ तक इसे समझना होगा। अन्यथा तो हमारे मुख का आकार भी सिमटता जायेगा। तब तो ये कहावत है, कोई भी कर्म करने से पहले तीन बार सोचो, समझो, फिर करो। तभी हमें रॉयल रिश्वतों से राहत मिलेगी और मन को भी सुकून मिलेगा। अन्यथा वापस लेने की सूक्ष्म कामनायें हमारी खुशी को छीन लेंगी। आप भी इसपर गहराई से सोचें और उस सूक्ष्मता को समझ पायें, तो आप भी इससे सावधान करें अपने आप को और रिश्वतों से राहत पायें। ठीक है ना...!

दिल्ली। ज्ञानचर्चा के पश्चात् गृहमंत्री राजनाथ सिंह को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू में होने वाले सम्मिट कम एक्सपो में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. राधा,लखनऊ, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. हुसैन।

मन का ध्यान रखने के लिए ध्यान

मेडिटेशन, मतलब सिर्फ भगवान को याद करना, उससे बात करना, उससे कनेक्शन जोड़ना ताकि उसका सबकुछ जो है यहाँ (मन में) डाउनलोड हो जाए। मेरा कनेक्शन परमात्मा से जुड़ा रहे। तो कर्मयोगी वो, जो परमात्मा की याद में रहकर कर्म करे।

तो यहाँ (मन का) ध्यान अच्छे से रखने के लिए सबसे इज़ी तरीका है कि ध्यान करो। मेडिटेशन मतलब ध्यान। तो मन का ध्यान रखने के लिए ध्यान करना होता है। तो परमात्मा को याद करने के तरीके को मेडिटेशन कहते हैं। हम जो कुछ कर रहे हैं वो करते हुए हमारा कनेक्शन किससे जुड़ा रहे? परमात्मा से। अब अगर मैं थॉट क्रियेट करूँ कि मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ.... तो रिकॉर्डिंग कौन सी हुई? हाईयर फ्रिक्वेंसी। सेकेण्ड थॉट क्रियेट करूँ मैं परमात्मा का बच्चा हूँ.... कौन सी फ्रिक्वेंसी की थॉट क्रियेट हुई? हाईयर। तो फिर मैंने थॉट क्रियेट किया कि परमात्मा सर्वशक्तिवान, शांति का सागर है, तो और ज़्यादा हाईयर थॉट आई।

हम बोलते हैं तुम मात पिता हम बालक तेरे, लेकिन मन में सोच रहे होते हैं कि बच्चे ने खाना खाया कि नहीं खाया! दिस इज़ द डिफ्रेंस। जो समय उसको याद करने का है, तो उस समय सिर्फ उसको याद कर लिया, तो चार्जिंग हो जायेगी। लेकिन जो समय उसको याद करने का है, उस टाइम भी औरों को याद करते रहेंगे तो मेरा मन किससे कनेक्टेड है? लोअर फ्रिक्वेंसी है। वो बच्चा वहाँ एग्ज़ाम की टेंशन में है, मैंने उसको याद किया, याद किया डाऊन हो गया। अब दूसरी चीज़ ये हो सकती है कि परमात्मा को याद किया, खुद की स्थिति को भी क्या किया, ऊपर लेकर गये। और फिर उस बच्चे के एग्ज़ाम के लिए भी उसको क्या दे दिया? हाईएस्ट फ्रिक्वेंसी की ब्लैसिंग्स दे दी। तो सिर्फ अपनी पॉवर नहीं बढ़ी, उसकी भी बढ़ गई। तो मेडिटेशन मतलब सारा दिन परमात्मा से एक सुंदर सा रिश्ता। कनेक्शन। परमात्मा से हम कौन सी बातें कर सकते हैं? क्या बात करेंगे उससे? क्योंकि अभी हम क्या करते हैं? फिक्सड बातें करते हैं। अगर हम रोज़ रोज़ यही

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

बातें करेंगे तो कोई भी बोर हो जायेगा। लेकिन यदि हम परमात्मा से, जैसे अपने बच्चे से बात करते हैं, वैसे बात करें तो कितना सुंदर रिश्ता बन जायेगा। वायब्रेशन्स इधर से, उधर से ट्रांसफर हो रही है। तो जैसे एक पेरेंट बच्चे से बात करता है और बच्चा अपने पेरेंट से बात करता है, ऐसे ही हमें भी परमात्मा से बात करनी है। प्रेयर की, बहुत बढ़िया, लेकिन प्रेयर के बाद अपनी बात भी तो करनी है ना! तो हम डरते हैं क्योंकि हम कई बार शब्दों की एक्यूरेसी में अटक गये हैं कि मेरा वो हर शब्द एक्यूरेट होना चाहिए। वो मेरी विधि पूजा की एक्यूरेट होनी चाहिए। कई बार हम उस एक्यूरेसी के लिए डर भी क्रियेट कर देते हैं कि मेरी विधि ठीक नहीं थी ना, कुछ गड़बड़ हो जायेगी। बच्चे और पेरेंट्स के साथ एक्यूरेसी नहीं होती है। बस उनको बच्चे की हर चीज़ अच्छी लगती है। वैसे ही परमात्मा के साथ हमारा रिश्ता होना चाहिए। तो एक रिश्ता जब परमात्मा के साथ बन जाता है, जैसा आपका बच्चे के साथ है, तो आप देखो कितना एन्जॉय करने लग जाते हैं। जैसे जैसे आप इस रिश्ते को बढ़ाते जायेंगे, फील करते जायेंगे, आपकी एक्यूरेसी भी बढ़ती जायेगी।

स्वास्थ्य

नाभी कुदरत की एक अद्भुत देन

एक 62 वर्ष के बुज़ूर्ग को अचानक बाईं आँख से कम दिखना शुरू हो गया। खासकर रात को नज़र न के बराबर होने लगी। जाँच करने से यह निष्कर्ष निकला कि उनकी आँखें ठीक हैं परंतु बाईं आँख की रक्त नलियाँ सूख रही हैं। रिपोर्ट में यह सामने आया कि अब वो जीवन भर देख नहीं पायेंगे लेकिन यह संभव नहीं है।

हमारा शरीर परमात्मा की अद्भुत देन है। गर्भ की उत्पत्ति नाभी के पीछे होती है, उसको माता के साथ जुड़ी हुई नाड़ी से पोषण मिलता है और इसलिए मृत्यु के तीन घंटे तक नाभी गर्म रहती है।

गर्भधारण के नौ महीनों अर्थात् 270 दिन बाद एक सम्पूर्ण बाल स्वरूप बनता है। नाभी द्वारा सभी नसों का जुड़ाव गर्भ के साथ होता है। इसलिए नाभी एक अद्भुत भाग है।

नाभी के पीछे की ओर पेचूटी या नैवेल बटन होता है। जिसमें 72000 से भी अधिक रक्त धमनियां स्थित होती हैं। अगर सारी धमनियों को जोड़ा जाए तो उनकी लम्बाई इतनी हो जायेगी कि पृथ्वी के गोलाई पर दो बार लपेटा जा सके।

नाभी में गाय का शुद्ध घी या तेल लगाने से बहुत सारी शारीरिक दुर्बलता का उपाय हो सकता है।

✳ आँखों का शुष्क हो जाना, नज़र कमज़ोर हो जाना, चमकदार त्वचा और बालों के लिए उपाय : सोने से पहले शुद्ध घी या नारियल तेल की 3 से 7 बूंदें नाभी में डालें और नाभी के आस पास डेढ़ इंच गोलाई में फैला दें।

✳ घुटने के दर्द में उपाय : सोने से पहले तीन से सात बूंद अरंडी का तेल नाभी में डालें और उसके आस पास डेढ़ इंच गोलाई में फैला दें।

✳ शरीर में कम्पन तथा जोड़ों के दर्द और शुष्क त्वचा के लिए उपाय:

रात को सोने से पहले तीन से सात बूंद राई या सरसों का तेल नाभी में डालें और उसके चारो ओर डेढ़ इंच में फैला दें।

✳ मुँह और गाल पर होने वाले पिम्पल के लिए उपाय : नीम का तेल तीन से सात बूंद नाभी में उपरोक्त तरीके से डालें।

नाभी में तेल डालने का कारण :

हमारी नाभी को मालूम रहता है कि हमारी कौन सी रक्तवाहिनी सूख रही है, इसलिए वो उसी धमनी में तेल का प्रवाह कर देती है। जब बालक छोटा होता है और उसका पेट दुःखता है तब हम हिंग और पानी या तेल का मिश्रण उसके पेट और नाभी के आस पास लगाते हैं और उसका दर्द तुरंत गायब हो जाता है। बस यही काम है तेल का।

घी और तेल नाभी में डालते समय ड्रॉपर का प्रयोग करें, ताकि उसे डालने में आसानी रहे। अपने स्नेहीजनों, मित्रों और परिजनों कों इस नाभी में तेल और घी डालने के लाभ के बारे में बताएं, स्वयं प्रयोग करें व दूसरों को कराएं।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमारा मन हाथी के मन जैसा है। जिसे पतली-पतली रस्सियों ने ऐसा बांधा है जिससे छूटने में हम अपने आपको असमर्थ समझते हैं। कारण, जब हम छोटे बच्चे होते हैं तो हमारी रस्सी एक दो से बंधी होती है, वो हमारे माँ-बाप हैं। और जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हम पढ़ने जाते हैं तो हमारे कुछ दोस्त बनते जाते हैं। थोड़ी ओर रस्सी मोटी हुई, इसके बाद जब हम उच्च स्तर की पढ़ाई करते हैं, कहीं बाहर जाते हैं, इसके बाद हम कमाने लग जाते हैं तो वहाँ भी औपचारिक रूप से कुछ पतली रस्सियां ओर जुड़ती जाती हैं और इसके बाद जब हमारी शादी हो जाती है एक ओर रस्सी से हम बंध जाते हैं। अब यहाँ देखिये रस्सी दिन प्रतिदिन मोटी ही होती है। जब वो एक थी पतली थी, तो तब हम उसे आसानी से तोड़ सकते थे यानी बंधन से छुट सकते थे। जैसे-जैसे हम बंधनों में बंधते चले गये तो रस्सी मोटी होती गई और उससे छूटना भी हमारे वश में नहीं रहा। अब हम असहाय हैं, हमको लगता है कि हमको सभी ने बांध रखा है कहीं किसी ने, तो कहीं किसी ने। अब देखो अगर हमारा मन ऐसे ही उलझा रहेगा तो चमत्कार कैसे होगा? सोचिये, यदि कोई भी कुछ नया नहीं कर पा रहा है, कुछ अलग नहीं कर पा रहा है, उदास रहता है या बीमार रहता है तो उसका मन निश्चित रूप से पतली या मोटी रस्सी से बंधा हुआ ही है तभी उससे कुछ क्रियेटिव नहीं हो पा रहा है। रचनात्मक बनने के लिए मोह से बहुत ऊपर उठना होता है। मोहग्रस्त इंसान कभी भी निर्णय लेने में असमर्थ होता है। ऐसे लोग कभी भी सफल नहीं होते तथा वो चार जनों (परिवार) के चक्कर में सम्पूर्ण जीवन नष्ट कर देते हैं। इतना आसान नहीं है शक्तिशाली बनना। आज जो बैचलर्स हैं वो भी उदास हैं, वो क्यों उदास हैं? उनको भी कहीं ना कहीं कुछ बातों से इतना गहरा लगाव है कि वो कुछ करना चाहे और उसे ना कर पाने में असमर्थ हैं। अब मन को खुलापन चाहिए, मन को स्पेस चाहिए हर हाल में चाहिए। आप सोचिये ज़रा यदि कुछ भी ऐसा संसार में लोगों के साथ हो रहा है तो कितना गहरा मन बंधा हुआ है हरेक चीज़ से। जिससे छोड़ना इतना मुश्किल है। इसीलिए मन अपने ढंग से काम नहीं कर सकता इसीलिए उसे खुलापन चाहिए ही। मन वास्तव में है चमत्कारी चीज़, हरेक विचार उसको कुछ देके जाते हैं। चाहे वो किसी से बंधे हुए हैं या नहीं बंधे हुए हैं। जब वो विचार करते हैं तो उन विचारों में चाहे लगाव की सुगंध हो या ईर्ष्या की दुर्गंध हो फिर भी वो विचार काम तो कर रहे हैं ना। तो क्यों ना उससे ज़ोर लगाकर तोड़ दिया जाये। तोड़ना अगर कठिन लगता है तो कारण है ताकत नहीं है। अब ताकत लेने के लिए ही मन को परमपिता परमात्मा से जोड़ने की आवश्यकता है जिससे हम ताकतवर होकर कुछ बंधनों को तोड़कर चमत्कारीक रूप से जीवन जी पायेंगे।

एक हाथी पतली सी जंजीर है और वो आराम है। कारण, जब तो उसे एक छोटे के सहारे बांधते उससे छूटने का तो उसे लगता है है। इतने समय से आपको देखता वो उसे एक झटके

को एक में बांधा जाता से खड़ा रहता वो बच्चा होता है से पतले रस्से हैं। और जब वो प्रयास करता है कि वो बंधा हुआ वो ऐसे ही अपने आता है। चाहे तो से तोड़ दे, लेकिन

वो उसे तोड़ नहीं सकता क्योंकि वो मान लेता है कि वो बंधा हुआ है।

बोनेयेर। करेबियन कंट्रीज़ में सेवार्थ जाने के पश्चात् बोनेयेर के राज्यपाल कर्वाइन जॉर्ज के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. ज्योति,दुबई तथा ब्र.कु. एनर,इंचार्ज,ब्रह्माकुमारीज़,बोनेयेर कंट्री।

आगरा-उ.प्र.। क्रीड़ा भारती एवं जिला प्रशासन,आगरा द्वारा होटल वैभव पैलेस मदिया कटरा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2018 के आयोजन में सहयोग करने वालों के सम्मान समारोह में खेल मंत्री एवं क्रीड़ा भारती के प्रमुख चेतन चौहान ब्र.कु. मधु को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. ममता तथा ब्र.कु. रीना।

बहजोई-डिवार्ह(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र के नये भवन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राज्यमंत्री गुलाबो देवी, नगर चेयरमैन राजेश शेखर, समाज सेविका संगीता भार्गव, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

फतेहगढ़-उ.प्र.। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर कार्यक्रम में शुगर फैक्ट्री के अति. महा प्रबन्धक जगमोहन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु.मीरा।

हमीरपुर-उ.प्र.। जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रताप पाण्डे को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका तथा प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. सपना।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ एवं होंडा मोटरसाइकिल के तत्वावधान में गांव गुगाना के पंचायत भवन में आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. डॉ. दुर्गेश, डॉ. टी.एम. अग्रवाल, डॉ. अमित, डॉ. सपना, सरपंच राजपाल तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-23 (2017-2018)

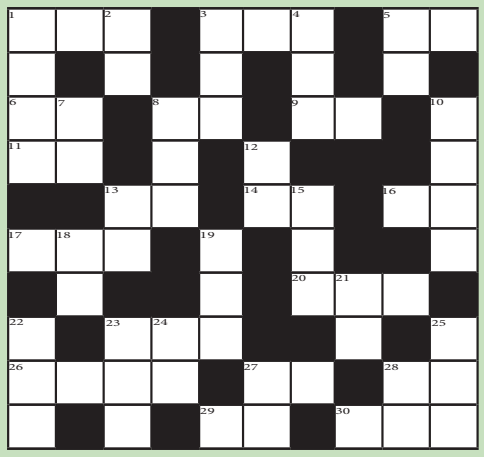

ऊपर से नीचे

1....बुद्धि विनश्यन्ति, विलोम (4)
2. संशय, शंका (2)
3. निश्चिंत, ...बादशाह (3)
4. नदी, सरिता (3)
5. अन्तर्मुखता की...में बैठकर बाबा से रूहरिहान करना है, कंदरा (2)
7. कठोर, मजबूत (2)
8. ....गया तो सब कुछ गया, आचरण (3)
10. श्रृंगार, सजावट (4)
12. आरम्भ, प्रारम्भ, आदि (2)
13. बाप, जनक, पितृ (2)
15. रक्षा, सुरक्षा, तुम्हारे पर माया का...है, नज़र (3)
18. तागा, सूत (2)
19. सहज, आसान (3)
21. ....जानें प्रभु या तुम जानो, मैं का बहुवचन (2)
22. लून, लवण (3)
23. नास्तिक, उत्पाती (3)
24. विवर, छिद्र, छेद, जमीन के नीचे जीव जन्तुओं का घर (2)
25. नृत्य करना, ठुमकना (3)
27. संग,...तुम्हारा प्रभु कितना प्यारा (2)
28. दण्ड, सुशोभित (2)

बायें से दायें

1. गफलत मत करो... सामने खड़ा है, नाश (3)
3. असीमित, अपार, जिसकी हद न हो (3)
5. छिपा हुआ, यह ज्ञान बड़ा... है (2)
6. ईर्ष्या, आपस में... नहीं रेस करना है (2)
8. ... का ज्ञान बुद्धि में फिरता रहेगा तो माया का गला कट जायेगा (2)
9. अभी तुम बच्चे रूहानी...पर हो, सफर (2)
11. बाबा ने 3 सौगातें दी हैं ताज, तिलक और ... (2)
13. पूर्वज, पितर (2)
14. शक्ल, स्वरूप, स्वभाव (2)
16. शक, संशय (2)
17. माता ओ माता तू है सबकी भाग्य... (3)
20. सुकून, तसल्ली, चैन (3)
23. योग्य, लायक (3)
26. ....में जल उठी शमा (4)
27. छाया, परछाई, प्रतिबिंब (2)
28. ....तो बिठो नच, सत्य (2)
29. यह तन शिवबाबा का ...है (2)
30. शिवबाबा हम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों का...दे रहे हैं (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

वर्ग पहेली उत्तर

पहेली - 13
अप्रैल - 1 ओम - 1
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1. चंदा, 2. लड्डू, 3. हस्त, 4. करनीघोर, 5. अजान, 6. औलाद, 8. जीत, 11. स्वार्थी, 13. नाश, 14. आफत, 15. हित, 16. खुशी, 17. खैर, 18. राजन, 20. नगरी, 21. खुदा, 23. दवाई, 24. लगा, 25. सेवा।

बायें से दायें
1. चंचलता, 3. हमशरीक, 5. अस्त, 7. राजा, 8. जीवनी, 9. लाभ, 10. नजाकत, 11. स्वाद, 12. सार, 14. आहिस्ता, 16. खुशखैराफत, 19. ज्ञान, 21. खुशी, 22. रजत, 25. सेवाधारी, 26. सगाई, 27. जवाई।

पहेली - 14
अप्रैल - 2 ओम - 2
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
2. तन, 4. गति, 5. चक्र, 6. कदम, 8. बाप, 9. लक्ष्य, 10. अनुभव, 12. विस्तार, 13. व्यय, 15. वशीभूत, 16. नशा, 19. सारथी, 22. रिवाज, 23. सुर।

बायें से दायें
1. श्रीमत, 3. दाग, 5. चटक, 7. नम्र, 11. पवित्र, 14. यज्ञ, 15. वरदान, 17. रावण, 18. शान्ति, 19. सार, 20. भूमि, 21. परिवार, 23. सुख, 24. कतार, 25. सजग।

पहेली - 15
मई - 1 ओम -3
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1.पुरूषार्थ, 2. मधुबन, 4. हवा, 5. फिसलना, 9. साधन, 10. सर्वोत्तम, 13. शरीर, 14. वजन, 15. उधार, 17. क्षीरसागर, 18. महानता, 19. नफरत, 21. लगन, 22. जन।

बायें से दायें
1. पुरूषोत्तम, 3. महफिल, 6. धुन, 7. वास, 8. हिसाब, 11. धन, 12. नाश, 14. वर्णन, 15. उत्तर, 16. धाम, 17. क्षीर, 18. मनन, 20. फसल, 22. जलसा, 23. गगन, 24. ताकत, 25.भारत।

पहेली - 16
मई - 2 ओम - 4
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1. महिमा, 2. भेद, 3. दवा, 5. रहम, 8. याद, 9. रचना, 10. कला, 12. समय, 13. नाम, 15. तन, 16. गफलत, 18. भनक, 19. फ्राकदिल, 21. तक, 24. मन, 26. दीपक, 27. रथ, 30. शुद्ध।

बायें से दायें
1. मतभेद, 4. क्षीरखण्ड, 6. दवात, 7. माया, 9. रमणीक, 11. दस, 13. नाच, 14. लात, 17. मनमनाभव, 20. लत, 22. जनक, 23. कम, 25. तकदीर, 28. दिन, 29. पथ, 30. शुभ, 31. खुराक, 32. सिद्ध।

श्रीलंका। 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कैंडी के मुख्यमंत्री माननीय सरथ एकानायके तथा ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन।

कैलिफोर्निया-यू.एस.ए.। कार्यक्रम के पश्चात् जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी को समाज के लिए उत्कृष्ट सेवाओं हेतु कैलिफोर्निया राज्य की ओर से सर्टिफिकेट देकर सम्मानित करते हुए स्टेट एसेम्बलीमैन केन कूली, जॉन फिश, प्रेसीडेंट,इंटरफेथ काउंसिल ऑफ ग्रेटर सेक्रामेन्टो, माइकल मोरन,फाउण्डर,वननेस मिनिस्ट्री तथा ब्र.कु. हंसा,कोऑर्डिनेटर,ब्रह्माकुमारीज़,सेक्रामेन्टो।

मुम्बई। शिवसेना के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे को उनके 58वें जन्म दिन पर 1258 गुलाब के फूलों से बना गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके, ब्र.कु. सुवर्णा, ब्र.कु. अंकिता तथा ब्र.कु. उदय।

न्यू यॉर्क। इंडियन काउन्सलेट द्वारा गवर्नर्स आइलैंड स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी में आयोजित योगा सेलिब्रेशन्स इवेंट के दौरान मंच पर ब्र.कु. डॉ. बिन्नी तथा विभिन्न धर्म प्रतिनिधि।

मण्डी-गोविन्द गढ़(पंजाब)। योग कार्यक्रम के दौरान पतंजलि योग समिति के ट्रस्टी प्रकाश चन्द्र गर्ग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, ब्र.कु. राज बहन तथा ब्र.कु. सरस। साथ हैं उपप्रधान अमरजीत सिंह एवं ब्र.कु. साक्षी।

हुबली-गांधी नगर। साउथ वेस्टर्न रेलवे के चीफ सेफ्टी ऑफिसर आर.पी. मीना को सेवाकेन्द्र पर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लता।

सिम्पल, सैम्पल और एग्ज़ाम्पल

ब्र.कु. संतोष दीदी,मुम्बई

कोई फैक्ट्री का माल कैसा होगा, ये उसमें डाले गये रॉ-मटीरियल की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। सबसे पहले सभी माल को संतुलित मात्रा में समन्वय से होने वाले उत्पादन के अनुरूप मिलाया जाता है। तब कम्पनी जैसा चाहती है, वैसा प्रोडक्ट तैयार होता है। उसी तरह परमात्मा शिव ने नई दुनिया बनाने के लिए पहले-पहले सब बच्चों में नई दुनिया की गुणवत्ता भरी और सैम्पल तैयार किये। तो हम सभी का लक्ष्य है कि परमात्मा के समान सेवा करना। तो उसी अनुरूप परमात्मा ने हम सभी को तैयार किया और ईश्वरीय सेवाओं के लिए भेजा। सबसे पहले परमात्मा शिव ने एक सैम्पल तैयार किया ब्रह्मा बाबा के रूप में और उन्हें हमारे रोड मैप अर्थात् आदर्श के रूप में सामने रखा। तो हम देखें कि हम कहाँ तक उस सैम्पल की तरह साकार में विश्व सेवा का जो लक्ष्य है उसी अनुरूप कार्य कर रहे हैं?

ब्रह्मा बाबा कैसे सेवा करते थे, ये सब हमने अपनी नज़रों से देखा व समझा। अब हमारी बारी है कि हम ब्रह्मा बाबा के साथ कम्पेयर करें कि हम उसी अनुरूप सेवा कर रहे हैं? तो आज हम आपको ब्रह्मा बाबा कैसे सेवा करते थे, उसके बारे में बताने जा रहे हैं।

✶ ब्रह्मा बाबा हमेशा सिम्पल रहते थे। बाबा को हमेशा ये याद रहता था कि जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। बाबा सेवा करते सम्पर्क में आते, सबसे प्यार करते हुए सभी से न्यारा रहते थे। ये गुण उनमें सदा हमने देखा। बाबा सम्बन्ध निभाते थे, पर उतना ही बंधन मुक्त रहते थे। बाबा सेवा करते जैसे चमकते हुए लाइट रूप में दिखाई देते थे।

✶ बाबा को हमेशा कम-खर्च बाला-नशीन वाली सेवायें पसंद थीं। बाबा कभी शो नहीं करते थे। मुझे याद है, बाबा कहीं से ट्रैवल करके आते थे, तो बिल्कुल सिम्पल रीति से पहुंचते थे, उनके आने की खबर किसी को लगे ऐसा उनमें भाव हमने कभी नहीं देखा। इस तरह बाबा दिखावेपन से सदा मुक्त रहे। बाबा को कोई कहता था कि बाबा मैंने ये सेवा की और उसमें इतना खर्चा कम लगा, तो ये समाचार सुनते बाबा कहते थे कि अरे बच्चे! आप तो ज्ञान धन से भरपूर हो, तो आपको उनकी ज्ञान योग से सेवा करनी चाहिए ताकि वे आपको ईश्वरीय सेवा के लिए फ्री में प्रबंध करके दें। तो बाबा हमेशा कहते थे कि पहले उनकी सेवा करो, फिर वो अगर चाहते हैं तो ईश्वरीय सेवा में सहयोग करें।

✶ बाबा को मुरली से बहुत प्यार था। इसका यादगार आज भारत में कहते हैं कि 33 करोड़ देवी देवतायें हैं, लेकिन कृष्ण के सिवाय किसी भी देवी-देवता के हाथ में मुरली नहीं दिखाते। ब्रह्मा बाबा को शिव बाब की मुरली से बहुत ही गहरा प्यार था। जिसकी यादगार में आज भी श्रीकृष्ण के हाथ में सदा मुरली दिखाते हैं। यदि हमें नई दुनिया बनानी है तो शिव बाबा के जो भी डायरेक्शन्स हैं, उसे हू-ब-हू ज़मीन पर साकार करना ये हमारा परम कर्त्तव्य है।

✶ बाबा को हमने संकल्प में भी कभी अस्थिर होते नहीं देखा। बाबा की अवस्था संकल्प में भी एकरस रहती थी, कभी कोई भी चिंता तो दूर की बात पर वे साधारण चिंतन भी नहीं करते थे। बाबा हमेशा उच्च व श्रेष्ठ संकल्पों में रमण करते थे। बाबा को हमने हमेशा कर्मातीत अवस्था में देखा।

✶ बाबा सबको रिगार्ड देते थे। चाहे छोटे हों या बड़े। बाबा हम सबको बहुत प्यार करते थे, लेकिन प्यार करते हुए रमणीक ढंग से शिक्षा देकर ध्यान भी खिंचवाते थे। बाबा हमेशा कहते थे कि संगठन में एक ने कहा और दूसरे ने माना।

✶ ब्रह्मा बाबा हमारे सामने सैम्पल हैं। तो हमें भी वैसा ही बनना है। और ये इतना सहज है जैसे कार्बन कॉपी होती है ना! हमें भी उसे देख वैसे ही कॉपी करते चलना है। तब मंज़िल तो मिलनी ही है ना! बाबा हमेशा कहते थे, शिव भोलेनाथ का भंडारा है, उससे ही ब्रह्मा भोजन तैयार होता है और उससे ही सबकी परवरिश होती है। इसमें कितना गुह्य रहस्य समाया हुआ है। बाबा ने हमेशा यही कहा कि शिव बाबा का यज्ञ है और वो ही सबकी पालना करता है। हमने कभी भी ब्रह्मा बाबा को रिंचक मात्र भी देहभान में आते नहीं देखा।

जहाँ पहुंचना है, उसका रास्ता क्लीन और क्लीयर है और तौर तरीके भी मालूम हैं, तो मंज़िल तक पहुंचना बहुत ही सरल और सहज है। हमें भी ब्रह्मा बाप जैसी सेवा कर बाप समान बनने का लक्ष्य रखना है। हमारे सामने मिसाल के रूप में ब्रह्मा बाबा हैं। सिर्फ उन्हें कॉपी और कम्पेयर करते हुए चलते चलना है। कॉपी करना तो सहज होता है ना!

✶ बाबा हमेशा कहते थे, रहम करो और रहमदिल बनो। दूसरों को उठाओ और आगे बढ़ाओ। जैसे कोई गिर जाता है, तो उसे उठाने के लिए झुकना पड़ता है ना, तभी तो उसे उठा सकते हैं। बिना झुके तो गिरे हुए को उठा नहीं सकते। ऐसे ही कोई कमज़ोर है, तो उसपर रहम करना है और निरहंकारी बनकर उसे उठाने की सेवा करनी है। ऐसे सरल रहकर ही बाबा के समान सहज योगी बनना है।

उपरोक्त सप्त बिंदू से हम अपने आपको देखें और बाबा के साथ कम्पेयर करें तो हम भी बाबा जैसे बन जायेंगे और बाबा जैसे गुण धारण कर आगे बढ़ते हुए अपनी मंज़िल तक पहुंच ही जायेंगे।

तो सहज है ना? क्योंकि बाबा हमारे सामने सैम्पल के रूप में है। हमें तो सिर्फ उसके कदम पर कदम रखते हुए चलना है। कॉपी करना तो कोई मुश्किल नहीं है ना। कॉपी और कम्पेयर करते हुए हम कम्प्लीट बन ही जायेंगे। यह बहुत सहज और सरल तरीका है। सोचो नहीं, बस चलते जाओ।

प्रसन्नता

परपज़फुली जीवन जीना ही पर्सनैलिटी है, और पर्सनैलिटी में पर्पज़ की खुशबू से ही प्रसन्नता है। उसके विपरीत अगर देखें तो ईर्ष्या है, और ईर्ष्या हमें समकक्ष वालों से ही होती है। जैसे ईर्ष्या से हमारी रीयल खुशबू लुप्त होती जाती, ठीक वैसे जहाँ प्रसन्नता है, वहाँ खुशी और आनंद की सुगंध समाई हुई होती है। तो प्रसन्न रहिये और पर्सन बनिये।

ऐसा माना जाता है कि परिस्थितियाँ यदि मनोकूल रहें तो व्यक्ति प्रसन्न रहता है और विपरीत रहने पर दुःखी अथवा अप्रसन्न रहता है। वास्तव में व्यक्ति का प्रसन्न रहना परिस्थितियों पर नहीं बल्कि व्यक्ति के चरित्र पर निर्भर करता है। यदि आप परिवार विरोधी, समाज विरोधी व देश विरोधी कोई कार्य कर रहे हैं तो यह चरित्र हीनता है। अगर चरित्र ठीक नहीं है तो वह व्यक्ति कभी प्रसन्न नहीं हो सकता। योगी हो, राजनेता हो, नामीग्रामी सेवाधारी हो, साधारण मनुष्य हो,वह कभी भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके मन में अशांति ही बनी रहेगी। चरित्र के अलावा अप्रसन्नता का कारण क्रोध है।

क्रोध का मुख्य कारण ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिशोध है। ईर्ष्या हमारे मन की एक छिपी बीमारी जैसी है, जो धीमे ज़हर का काम करती है।आज इंसान इस बुराई के साथ जी रहा है, लेकिन इस ज़हरीली बीमारी का इलाज नहीं करता। ईर्ष्या एक ऐसा भाव है जिसका जन्म आलस्य, अभिमान एवं निराशा के कारण होता है। ईर्ष्या के कारण व्यक्ति अंदर ही अंदर दूसरों के प्रति स्वयं जलता रहता है। ईर्ष्या किसी का विशेष गुण, सुख, ऐश्वर्य नहीं देख सकती। उसे सामने वाले में सिर्फ बुराइयां ही नज़र आती हैं। ईर्ष्या करने वाला इंसान दूसरों की चीज़, तरक्की, शोहरत,धन-दौलत को बर्दाश्त नहीं कर पाता। इंसान मन ही मन कुढ़ने लगता है। जो प्राप्ति वह नहीं कर सका, वह प्राप्ति अगर दूसरा करने लगे, तो ईर्ष्या पैदा होती है। जो चीज़ मैं हासिल नहीं कर पाया, वह चीज़ दूसरे ने हासिल कैसे कर ली? जो लोग आपके पहचान वाले हैं, मित्र सम्बंधी हैं, पड़ोसी हैं या हमारे सहकर्मी हैं, विशेष तौर पर हमारा समकक्ष व्यक्ति हो और वह धन, मान, शान, रूप, पद-प्रतिष्ठा में उन्नति कर रहा हो तो उससे ईर्ष्या हो जाती है। अनजान या दूर के लोगों से हमें ईर्ष्या नहीं होगी। आप इंजीनियर हैं और दूसरा डॉक्टर है, तो उसकी प्रगति से आपको ईर्ष्या नहीं होगी। आपके जूनियर सहकर्मी का प्रमोशन हो जाए या आपके बदले आपके जूनियर की सराहना आपका बॉस करता हो तो उसके लिए तुरंत ईर्ष्या पैदा होगी।

ईर्ष्या हमेशा सामने वाले का गुण नहीं परन्तु अवगुण देखती है। ईर्ष्या एक गुप्तरोग है। जिसमें व्यक्ति स्वयं ही अंदर ही अंदर जलकर अपना नुकसान कर लेता है। जिन लोगों को आप पसंद करते हैं या करते थे, उन लोगों की एक लिस्ट बना लो। एक कॉपी में लिख लो। जब भी मन में किसी के प्रति ईर्ष्या उठने लगे या और किसी कारण से आप अप्रसन्न हों, उस समय अपने जानकारों की लिस्ट को सामने रखें। एक-एक व्यक्ति का नाम पढ़ें, उसका चित्र मन में सामने देखें और उसे 10 बार कहें आप शांत हो... शांत हो। जब हम 25 लोगों को इस प्रकार तरंगें दे देते हैं तो बहुत अच्छा-अच्छा लगने लगता है। यह संख्या जितनी बढ़ती जाती है तो उतनी ही हमारी आंतरिक खुशी बढ़ती जाती है और ईर्ष्या से जो पीड़ा हो रही होती है, वह बंद हो जाती है। धीरे-धीरे आप प्रसन्न रहने लगते हैं।

सच्चे नागरिकों से ही सत्धर्म की अपेक्षा की जा सकती है। मनुष्यों की बेईमानी असत्य को जिताती है, लेकिन सत्य मार्ग पर चलने वाले पराजित हुए मनुष्य को अपनी हार का दुःख नहीं होता। बदलता समय उसे देर-सवेर भी न्याय देता ही है। युद्ध में विजयी बनने से बड़ा विजय है, आत्मविजय!

विजयी ही रहें... अहंकारी नहीं !!!

खेल की स्पर्धा में जाने वाला एक विद्यार्थी अपने माता-पिता को कहता है कि मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं किसी भी तरह विजयी हो जाऊँ।

माँ तो चुप रही, लेकिन पिता ने कहाः 'ना, पुत्र, मैं तुझे किसी भी भोग से जीतने का आशीर्वाद नहीं दूंगा। मेरा तुझे आशीर्वाद है कि तू अपने सच्चे और सत्यनिष्ठ पराक्रम से विजेता बन। तूने जितनी साधना की है, उतना ही फल तुझे मिले।'

पिता की बात पुत्र के गले नहीं उतरी। वो चाहता था कि विजय मतलब विजय। विजेता का मूल और कुल कोई पूछता नहीं, लेकिन विजय का हार पहनाने के लिए उत्सुक होते हैं। कितने सारे पराजय की खाई में गिरने लायक लोग विजयी बन जाते हैं। विजय की भावना की ज़िन्दादिली का खात्मा हो जाता है। इसीलिए मनुष्य अहंकारी बनता है। आज जीत जाने पर भी, जीत पचाने में नाकामयाब रहने वालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। पूर्व में सत्याग्रही अपनी नहीं, लेकिन सत्य की विजय हो, ऐसी इच्छा रखते थे। जबकि आज तो सत्याग्रह के नाम से स्वार्थ की विजय हो, यही सिद्धि मान लेते हैं। 'मैं झूठी तरह से जीतूं, उससे तो अच्छा ये कि खुमारी पूर्वक लड़ते-लड़ते हारूँ, यही मेरी जीत है।' ऐसी प्रतिज्ञा हरेक स्पर्धा करने वाले उम्मीदवार को करनी चाहिए। मूल्य दिये बिना जीतने का प्रयत्न करने वाले, विजय के दरबार में भिखारी हैं। आज षड्यंत्रों के द्वारा परीक्षा दिये बिना ही सफल होने के चस्के दिनों दिन बहुत बढ़ते जा रहे हैं। मनुष्य को आज साधना और श्रम कर लम्बे अर्से में विजय मिलने में रस नहीं है, लेकिन किसी भी तरह से टेम्प्ररी विजय मिलती हो, तो उन्हें उसे जीवन में अग्रिम स्थान देने में रस है। मनुष्य का झण्डा ऊँचा रहे, नहीं, लेकिन सत्य और सदाचार और मानवता का झण्डा ऊँचा रहे, उसमें ही मनुष्य के धर्म की शान छुपी हुई है। शायर नाशाद ने उचित ही कहा है...

'हज़ारों जीते, हज़ारों हारे, अजब दुनिया की कश्मकश है, जो देखा नाशाद वक्त बाकी, न जीत बाकी, न हार बाकी।'

बहुत बार ऐसी दलील दी जाती है कि सत्यवादी हारते हैं और प्रपंची जीत जाते हैं। सच्चे नागरिकों से ही सत्धर्म की अपेक्षा की जा सकती है। मनुष्यों की बेईमानी असत्य को जिताती है, लेकिन सत्य मार्ग पर चलने वाले पराजित हुए मनुष्य को अपनी हार का दुःख नहीं होता। बदलता समय उसे देर-सवेर भी न्याय देता ही है। युद्ध में विजयी बनने से बड़ा विजय है, आत्मविजय! जब लोगों की विवेक दृष्टि मारी जाती है, तब वो साधारणता में महानता का दर्शन करता है। विजय, ये आत्मविश्वास मांगता है। इमर्सन ने कहा है कि मैं प्रत्येक वक्त हारा हूँ, फिर भी विजय के लिए जन्मा हूँ।

मनुष्य बाहर से पराजय का डर रख अंदर हार स्वीकार कर बैठ जाता है। बहुत बार मनुष्य बाहर से जीतता है, लेकिन उसकी अंतरात्मा को मालूम होता है कि कैसे अनुचित मार्ग अपनाकर उसे जीत मिली है। भयंकर युद्ध में हज़ारों दुर्जय शत्रुओं को जीतने से ज़्यादा खुद पर विजय सबसे बड़ा विजय है।

विजय, स्वतंत्रता के असीम आनंद की छूट नहीं देता, लेकिन स्वाधीन रहकर संयम पूर्वक आचरण करने की आपसे मांग करता है।

एक नीति कथा में दर्शाये अनुसार जब राम ने राक्षस राजा रावण को पुत्र सहित उसकी सेना का संहार किया, तब रावण का भाई विभीषण श्रीराम के पास जाकर कहने लगा : 'रावण अपने अहंकार के सामने किसी को कुछ नहीं समझता था। रावण जैसे शक्तिशाली और अभिमानी को हराकर आपने बहुत श्रेष्ठ काम किया है।' लेकिन श्रीराम ने ऐसे विजय को एक साधारण कार्य कहते हुए विभीषण को कहा : 'हे बन्धु विभीषण, रावण पर विजयी होना कोई बड़ी विजय नहीं है। हकीकत में सही विजय तो ये है कि दुर्गुणों रूपी सांसारिक दोषों को जीत सकें। सच्चा विजय तो यह है कि मनुष्य धर्ममय रथ में बैठकर दुर्गुणों और व्यसनों पर विजय प्राप्त करे। दुराचारी तो देर-सवेर पराजित होता ही है। रावण खुद के दुर्गुणों से ही पराजित हुआ।' रामचन्द्र पहले भी विभीषण को कहा करते थे कि मात्र काष्ठनिर्मित रथ पर सवार होकर अस्त्र-शस्त्र की ताकत से विजय प्राप्त नहीं होती। असली विजय के लिए धर्ममय रथ चाहिए। शॉर्य और धैर्य, ये धर्मरथ के पहिये हैं। विजय के लिए सबसे बड़ी शक्ति सत्यता होनी चाहिए। शूरवीरता, सत्याचरण से ही प्राप्त होती है। सत्य, दया, विवेक, संयम आदि ऐसे सद्गुण हैं, जिन्हें धारण करने वाले हमेशा अजेय रहते हैं। उनसे कोई जीत नहीं सकता।

विजय, स्वतंत्रता के असीम आनंद की छूट नहीं देता, लेकिन स्वाधीन रहकर संयम पूर्वक आचरण करने की आपसे मांग करता है।

विजय के लिए पाँच बातें:

✶ बहादुरी पूर्वक विजय के लिए कूद पड़िये, लेकिन आत्मविश्वास को शिथिल ना बनाइये।

✶ जीतने का लक्ष्य बनाइये, लेकिन उसके साधन, सत्य और धैर्य की उपेक्षा न करिये।

✶ असत्य को जीतते देख कभी उहापोह में न आ जायें, समय मनुष्य के सर्व कर्मों का साक्षी है।

✶ पारिवारिक जीवन या राजकीय जीवन में खेलदिली से न चूकें।

✶ विजय मिले, अहंकारी न बनें। विजयी दानव से बढ़िया है चरित्रवान मानव बनना।

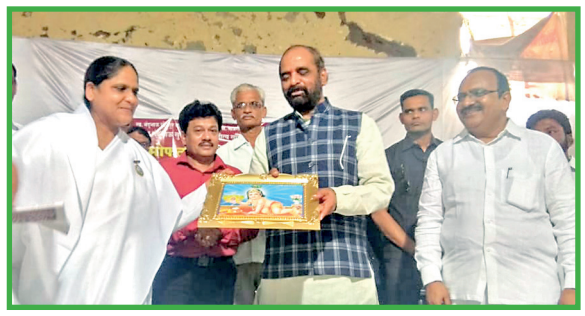

चन्द्रपुर-महा.। श्री साईं नगरी सहकारी पथ संस्था द्वारा आयोजित रक्त दान शिविर में गृह राज्यमंत्री हंसराज अहिर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुन्दा। साथ है पूर्व राज्यमंत्री संजय देवताले, जिला पंचायत सदस्य प्रवीणभाऊ सुर तथा अन्य।

रेवाड़ी-हरियाणा। पूर्व मंत्री कप्तान अजय यादव को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं ब्र.कु. रामा सिंह।

लोहरदगा-झारखण्ड। योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सी.आर.पी.एफ 158 बटालियन के द्वितियक कमाण्डेंट राजेश चौहान। साथ हैं डेप्युटी कमांडेंट सुरेश उराँव, ब्र.कु. बहनें व अन्य।

श्रीगंगानगर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा पुलिसकर्मियों के लिए आयोजित 'इरेडिक्शन ऑफ स्ट्रेस एंड इनहेन्सिंग इनर स्ट्रेन्थ' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कमाण्डर शिव, डॉ. दिलीप पनवेल, ब्र.कु. विजया, आई.पी.एस. हरेन्द्र कुमार तथा डी.एस.पी. सुरेन्द्र सिंह राठौड़।

प्रेम

प्रेम कुरूपता के बंधन में नहीं बंधता। प्रेम निश्छल और निरंतर बहने वाली ऊर्जा का नाम है। तभी तो कहते हैं बाल गोपाल, अर्थात् बच्चे परमात्मा का रूप हैं और वो उनमें ही दिखाई पड़ता है। जैसे जैसे वो बड़ा होता, तब हम उसे निश्छल प्रेम के विरूद्ध आकार देते हैं और वो प्रेम धीरे धीरे समाप्त हो जाता है। तो प्रेम को देखना व समझना हो, तो नन्हें बच्चे को देखें, जहाँ उनकी भाषा ही प्रेम है। बस! प्रेम के अलावा और कुछ नहीं। बाकी तो सब जगह मिलावट ही मिलेगी।

हर बच्चा पैदा होता है प्रेम को लेकर, इसीलिए तो हर बच्चा प्यारा लगता है। हर बच्चा प्यारा लगता है, हर बच्चा सुंदर है। आपने कभी कोई कुरूप बच्चा देखा है? बच्चे का सौंदर्य जैसे उसके शरीर पर निर्भर नहीं है। बल्कि उसकी भीतरी क्षमता पर बच्चे का दिया जल रहा है।

अभी उसके रोम-रोम से चारो तरफ प्रेम की रोशनी पड़ती है। अभी वह जिस तरफ देखता है वहीं प्रेम है। पर जैसे जैसे वह बड़ा होगा, वैसे वैसे प्रेम खोने लगेगा। हम ही सहायता करते हैं कि प्रेम खो जाए। उसे हम प्रेम करना नहीं सिखाते, प्रेम से सावधान रहना सिखाते हैं : क्योंकि प्रेम बड़ा खतरनाक है।

हम बच्चे को सिखाते हैं संदेह करना, क्योंकि इस दुनिया में संदेह की ज़रूरत है, नहीं तो लोग लूट लेंगे। धोखाधड़ी है, बहुत बेईमानी है, प्रपंच है। अगर तुम संदेह न कर सके, तो कोई भी तुम्हें लूट लेगा। चारो तरफ लुटेरे हैं। हम चारो तरफ से परमात्मा का ध्यान नहीं रखते, हम चारो तरफ के लुटेरों का ध्यान रखते हैं और हम लुटेरों के लिए तैयार करते हैं बच्चों को। यदि लुटेरों के लिए तैयार करना हो, तो प्रेम नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि प्रेम खतरनाक है।

प्रेम का अर्थ है : भरोसा। प्रेम का अर्थ है : श्रद्धा। प्रेम का अर्थ है : स्वीकार। संदेह का अर्थ है : होश रखो, कोई लूट न ले, बचाओ अपने को, सदा तत्पर रहो, आक्रमण होने को है कहीं न कहीं से और इसके पहले कि आक्रमण हो, तुम खुद आक्रमण कर दो, क्योंकि वही रक्षा का सबसे उचित उपाय है। तो प्रतिपल जैसे संतरी पहरे पर खड़ा हो ऐसे हम बच्चों को तैयार करते हैं।

तभी हम बच्चे को कहते हैं कि प्रौढ़ हुआ। जब उसकी प्रेम की क्षमता पूरी खो जाती है, जब वह चारो तरफ शत्रु को देखने लगता है। मित्र उसे कहीं भी दिखाई नहीं पड़ता, जब वह अपने आप पर भी संदेह करता है तभी हम समझ पाते हैं कि अब यह योग्य हुआ, दुनिया में जाने योग्य हुआ। अब बचपना न रहा, अब इसे कोई धोखा न दे सकेगा। अब यह दूसरों को धोखा देगा।

कबीर ने कहा है कि तुम धोखा खा लो, लेकिन धोखा मत देना, क्योंकि धोखा खा लेन से कुछ भी नहीं खोता है। धोखा देने से सबकुछ खो जाता है। किस सबकुछ की बात करते हैं कबीर?

जैसे-जैसे तुम धोखा देते हो वैसे-वैसे तुम्हारे प्रेम की क्षमता खो जाती है। कैसे तुम प्रेम करोगे, अगर तुम धोखा देते हो और अगर तुम डरे हो तो भय तो ज़हर है, प्रेम का फूल खिल न पायेगा। अगर तुम डरे हुए हो तो प्रेम कैसे करोगे? भय से कहीं प्रेम उपजा है? भय से तो घृणा उपजती है। भय से तो शत्रुता उपजती है। भय से तो तुम अपनी सुरक्षा में लग जाते हो।

पूरा जीवन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वैसे-वैसे सुरक्षा करता है : धन से, मकान से, व्यवस्था से, सब तरफ से इंतज़ाम करता है कि कहीं से कोई हमला न हो जाए। लेकिन इसी इंतज़ाम में हम भूल जाते हैं कि सब द्वार बंद हो जाते हैं और प्रेम के आने का रास्ता भी अवरूद्ध हो जाता है। सुरक्षा पूरी हो जाती है, लेकिन सुरक्षा कब्र बन जाती है और प्रेम समाप्त हो जाता है।

जालोर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मूक-बधीर स्कूल के दिव्यांग बच्चों को थ्री.डी. चित्र प्रदर्शनी तथा ब्रेल लिपि में छपे ईश्वरीय संदेशों के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु. सूर्यमणि,थ्री.डी. चित्र एवं ब्रेल लिपि विशेषज्ञ,माउण्ट आबू। साथ हैं सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रन्जू।

मलकापुर-महा.। सर्कस में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सर्कस हेड संकपाळ जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु.वर्षा तथा उज्वला बहन।

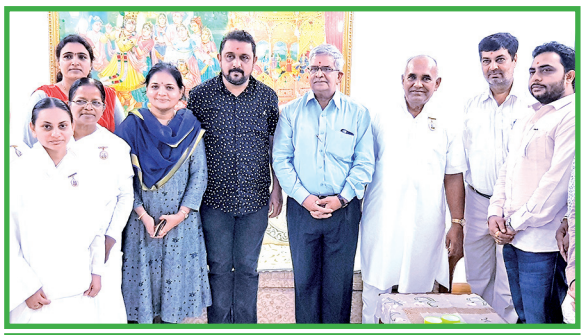

वलसाड-गुज.। गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं विधायक कनुभाई देसाई, पूर्व मेयर सोनल सोलंकी, जिला उप प्रमुख उर्मी बहन, ब्र.कु. रोहित, ब्र.कु. जसु बहन तथा भाजपा सदस्य।

ब्रह्मापुर-पी.यू.आर.सी। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के पश्चात् समूह चित्र में विधायक प्रकाश पात्र, डायबिटोलॉजिस्ट डॉ. रमेश पटनायक, ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. माला तथा प्रतिभागी बच्चे।

कोटा-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सेंट्रल जेल के डी.आई.जी. सुधीर प्रकाश तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला तथा ब्र.कु. ज्योति।

जबलपुर-नेपियर टाउन। अखिल भारतीय दिव्य नगरी स्लम एरिया सेवा योजना का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए संस्थान के सेक्रेट्री एवं प्रोजेक्ट चीफ प्रोमोटर ब्र.कु. ललित, योजना चीफ एक्ज़ीक्युटिव ब्र.कु. इशिता, डॉ. नीतू वैश्य, डॉ. पुष्पा पाण्डेय, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

दुर्ग-छ.ग.। 'सिद्धि स्वरूप योग तपस्या भट्ठी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. शारदा,गुज., मुख्य वन संरक्षक प्रेम कुमार, समाज सेवी नेतराम अग्रवाल व ब्र.कु. रीटा।

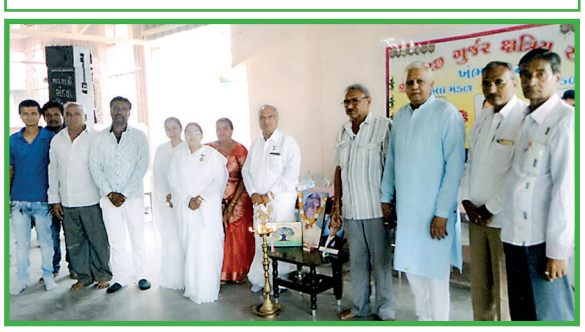

भुज कच्छ-गुज.। कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज खंभरा - घटक में सरस्वती सम्मान और समाज रतन सम्मान कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् चित्र में समाज रत्न विनोद सोलंकी, ब्र.कु. रश्मी, ब्र.कु. दक्षा, प्रादेशिक प्रमुख ब्र.कु. बाबु, समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लाघुराम भाई, घटक प्रमुख रमेश परमार, महिला प्रमुख रसीला बहन, युवा प्रमुख मोहित भाई, दिलीप भाई, जीवराम भाई तथा अन्य।

भागीदार... पुण्य कर्म में ही बनें

- गतांक से आगे...

पुण्यकर्म में भी भागीदारी होती है तो पापकर्म में भी भागीदारी होती है। जैसे एक कसाई है, उसने किसी पशु को मारा। उसने तो पापकर्म किया, लेकिन उस पशु के मांस को जिसको बेचा, वो दुकानदार भी भागीदार हो गया। उसके साथ जिसने खरीदा वो भी भागीदार हो गया। उसके बाद जिसने घर में लाया और जिसने पकाया वो भी भागीदार हो गया और जिसने खाया वो भी भागीदार हो गया। उस समय अगर कोई मेहमान आ गये और उनको परोसा तो वो भी उस भागीदारी में जुड़ गए। अब ये सारे लोग जो भागीदारी में जुड़े, जब सेटल करने का समय आयेगा तो सबको इकट्ठा सेटल करना पड़ेगा या नहीं करना पड़ेगा? बस में कहीं जा रहे हैं, बस में एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं हैं। जब बस फुल स्पीड पर होती है और कोई जानवर एकदम से रास्ता क्रॉस करता है और उसी समय मर जाता है। वही जानवर पुनर्जन्म लेकर के वही रास्ता क्रॉस करता है। उस जानवर को बचाने के समय बस का बैलेंस असंतुलित हो जाता है। वो बस कहीं जाकर के ज़ोर से टकराई और नदी या खाई में गिर जाती है। बस में सवार सभी पचास लोग मारे जाते हैं। तो कैसे इकट्ठे उन सभी को हिसाब चुकाना पड़ता है! वो संयोग बन जाता है कि कैसे वो सारी आत्माएं कहाँ-कहाँ से इकट्ठी हो जाती हैं। अब उस समय कोई कहे कि अरे वे निर्दोष थे। निर्दोष उनमें कोई नहीं था। कहीं न कहीं दोष में उनका हिस्सा था। इसलिए वो संयोग रचा। इस ड्रामा के अंदर जहाँ वो हिसाब चुक्तू करने का समय आया तो वो हिसाब चुक्तू होता ही है।

इसलिए कहा जाता है कि दान जब करो तो सोच समझकर करो। क्योंकि कुपात्र को अगर चला गया तो वहाँ हम पापकर्म के भागी इस प्रकार हो जायेंगे कि पता भी नहीं चलेगा। इस तरह से कई लोगों को अपने हिसाब-किताब चुक्तू करने पड़ते हैं। भावार्थ यही है कि सात्विक दान जो बताया गया है, उसके हिसाब से अगर हम चलें और अगर सुपात्र नहीं मिलता है तो दान नहीं करना अच्छा है। ये गीता में भी कहा गया है। फिर इस अध्याय के अंत में यही बताया गया है कि ''ओम तत्सत्''। ओम माना अहम्। अहम् माना मैं आत्मा। तत्व माना समस्त तत्व और सत् माना सद्भाव, सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव। सत्य में दृढ़ता होती है। तो दृढ़ भाव में अपने आपको स्थित करो। जब आत्मा, अपने सम्पूर्ण आंतरिक तत्व ज्ञान, गुण और शक्तियों को श्रेष्ठ भाव, सत्य भाव और दृढ़ भाव में स्थित करती है तब उसका सदुपयोग होने लगता है। - क्रमश:

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया, संपादक,
ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.) -307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

यह जीवन है...

जिस शरीर की अदाओं पर
हम मर मिटते हैं,
रात-रात भर करवटें बदलते हैं,
मृत्यु के बाद वह आकर्षण
कहाँ चला जाता है!
आप उसे जितनी जल्दी हो सके
घर से निकालने की कोशिश करते हैं
उसे मिट्टी कहा जाता है।
फिर यह शरीर सुंदर कैसे हुआ?
सुंदरता शरीर में नहीं होती,
सुंदर होते हैं उस व्यक्ति के कर्म
उसकी वाणी, व्यवहार, उसके संस्कार
और उसका चरित्र।
जिसके जीवन में यह सब हैं
केवल वही सुंदर है।

ख्यालों के आईने में...

चिन्ता?
अगर आप उन बातों एवं परिस्थितियों की वजह से चिंतित हो जाते हैं, जो आपके नियंत्रण में नहीं हैं तो इसका परिणाम समय की बर्बादी एवं भविष्य में पछतावा है।

हार न मानना
बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी, जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। इसलिए लक्ष्य की ओर बढ़ें।

कथा सरिता

तो हम क्यों नहीं?

यह जापान में घटी एक सच्ची घटना है। अपने मकान का नवीनीकरण करने के लिए एक जापानी अपने मकान की दीवारों को तोड़ रहा था। जापान में लकड़ी की दीवारों के बीच खाली जगह होती है, यानी दीवारें अंदर से पोली होती हैं। जब वह लकड़ी की दीवारों को चीर-तोड़ रहा था तभी उसने देखा कि दीवार के अंदर की तरफ लकड़ी पर एक छिपकली, बाहर से उसके पैर पर ठुकी कील के कारण एक ही जगह पर जमी पड़ी है। जब उसने यह दृश्य देखा तो उसे बहुत दया आई पर साथ ही वह जिज्ञासु भी हो गया। जब उसने आगे जाँच की तो पाया कि वह कील तो उसके मकान बनते समय पाँच साल पहले ठोकी गई थी!

एक छिपकली इस स्थिति में पाँच साल तक जीवित थी! दीवार के अंधेरे पार्टीशन के बीच, बिना हिले डुले। यह अविश्वसनीय, असंभव और चौंका देने वाला था! उसकी समझ से यह परे था कि एक छिपकली, जिसका एक पैर, एक ही स्थान पर पिछले पाँच साल से कील के कारण चिपका हुआ था और जो अपनी जगह से एक इंच भी न हिली थी, वह कैसे जीवित रह सकती है?

अब उसने यह देखने के लिए कि वह छिपकली अब तक क्या करती रही है और कैसे अपने भोजन की ज़रूरत को पूरा करती रही है, अपना काम रोक दिया। थोड़ी देर बाद, पता नहीं कहाँ से, एक दूसरी छिपकली प्रकट हुई, वह अपने मुँह में भोजन दबाये हुए थी, उस फँसी हुई छिपकली को खिलाने के लिए! उफ्फ! वह सन्न रह गया! यह दृश्य उसके दिल को अंदर तक छू गया।

एक छिपकली जिसका एक पैर कील से ठुका हुआ था, को एक दूसरी छिपकली पिछले पाँच साल से भोजन खिला रही थी, अद्‌भुत! दूसरी छिपकली ने अपने साथी के बचने की उम्मीद नहीं छोड़ी थी। वह पहली छिपकली को पिछले पाँच साल से भोजन करवा रही थी। अजीब है, एक छोटा सा जन्तु तो यह कर सकता है पर हम मनुष्य जैसे प्राणी, जिसे बुद्धि में सर्वश्रेष्ठ होने का आशीर्वाद मिला हुआ है, नहीं कर सकता।

कृप्या अपने प्रिय लोगों को कभी न छोड़ें! लोगों को उनकी तकलीफ के समय अपनी पीठ न दिखायें! अपने आपको महाज्ञानी या सर्वश्रेष्ठ समझने की भूल न करें! आज आप सौभाग्यशाली हो सकते हैं पर कल तो अनिश्चित ही है और कल चीज़ें बदल भी सकती हैं! प्रकृति ने हमारी अंगुलियों के बीच शायद जगह भी इसीलिए दी है ताकि हम किसी दूसरे का हाथ थाम सकें!

आप आज किसी का साथ दीजिये, कल कोई न कोई आपका साथ देगा! धर्म चाहे जो भी हो, बस अच्छे इंसान बनो, हिसाब हमारे कर्म का होगा, धर्म का नहीं।

श्रद्धा और समर्पण

एक गाय घास चरने के लिए एक जंगल में चली गई। शाम ढ़लने के करीब थी। उसने देखा कि एक बाघ उसकी तरफ दबे पांव बढ़ रहा है। वह डर के मारे इधर-उधर भागने लगी। वह बाघ भी उसके पीछे दौड़ने लगा। दौड़ते हुए गाय को सामने एक तालाब दिखाई दिया। घबराई हुई गाय उस तालाब के अंदर घुस गई। वह बाघ भी उसका पीछा करते हुए तालाब के अंदर घुस गया। तब उन्होंने देखा कि वह तालाब बहुत गहरा नहीं था। उसमें पानी कम था और कीचड़ से भरा हुआ था। उन दोनों के बीच की दूरी काफी कम हुई थी। लेकिन अब वह कुछ नहीं कर पा रहे थे। वह गाय उस कीचड़ के अंदर धीरे-धीरे धंसने लगी। वह बाघ भी उसके पास होते हुए भी उसे पकड़ नहीं सका। वह भी धीरे-धीरे कीचड़ के अंदर धंसने लगा। दोनों भी करीब-करीब गले तक उस कीचड़ के अंदर फंस गए। दोनों हिल भी नहीं पा रहे थे। गाय के करीब होने के बावजूद वह बाघ उसे पकड़ नहीं पा रहा था। थोड़ी देर बार गाय ने उस बाघ से पूछा, क्या तुम्हारा कोई गुरू या मालिक है? बाघ ने गुर्राते हुए कहा कि मैं तो जंगल का राजा हूँ। मेरा कोई मालिक नहीं। मैं खुद ही जंगल का मालिक हूँ। गाय ने कहा, लेकिन तुम्हारे उस शक्ति का यहाँ क्या उपयोग है? उस बाघ ने कहा कि तुम भी तो फंस गई हो। तुम्हारी भी तो हालत मेरे जैसी है।

गाय ने मुस्कुराते हुए कहा, बिल्कुल नहीं। मेरा मालिक जब शाम को घर आयेगा और मुझे वहां पर नहीं पायेगा तो वह ढूंढ़ते हुए यहाँ ज़रूर आयेगा और मुझे इस कीचड़ से निकाल कर अपने घर ले जाएगा। तुम्हें कौन ले जाएगा? थोड़ी ही देर में सच में ही एक आदमी वहाँ पर आया और गाय को कीचड़ से निकालकर अपने घर ले गया। जाते समय गाय और उसका मालिक दोनों एक दूसरे की तरफ कृतज्ञता पूर्वक देख रहे थे। वे चाहते हुए भी उस बाघ को कीचड़ से नहीं निकाल सकते थे, क्योंकि उनकी जान के लिए वह खतरा था।

गाय समर्पित हृदय का प्रतीक है। बाघ अहंकारी मन है और मालिक सद्‌गुरू का प्रतीक है। कीचड़ यह संसार है। इस संसार में किसी पर निर्भर नहीं होना अच्छी बात है लेकिन उसकी अति नहीं होनी चाहिए। आपको किसी सच्चे मित्र, किसी सहयोगी की हमेशा ही ज़रूरत होती है।

टूटी चप्पल

पता नहीं ये सामने वाला सेठ हफ्ते में तीन-चार बार अपनी चप्पल कैसे तोड़ आता है! मोची बुदबुदाया, नज़र सामने बड़ी किराना दुकान पर बैठे मोटे सेठ पर थी। हर बार जब उस मोची के पास कोई काम ना होता तो उस सेठ का नौकर सेठ की टूटी चप्पल बनाने को दे जाता। मोची अपनी पूरी लगन से वो चप्पल सी देता, अब तो दो-तीन महीने नहीं टूटने वाली। सेठ का नौकर आता और बिना मोलभाव किए पैसे देकर उस मोची से चप्पल ले जाता। पर दो-तीन दिन बाद फिर वही चप्पल टूटी हुई उस मोची के पास पहुंच जाती। आज फिर सुबह हुई, सूरज निकला। सेठ का नौकर दुकान में झाड़ू लगा रहा था। और सेठ अपनी चप्पल तोड़ने में लगा था। पूरी मशक्कत के बाद जब चप्पल न टूटी तो उसने नौकर को आवाज़ लगाई। अरे रामधन! इसका कुछ कर, ये मंगू भी पता नहीं कौन से धागे से चप्पल सीता है, टूटती ही नहीं। रामधन आज सारी गांठें खोल लेना चाहता था। सेठ जी मुझे तो ये हर बार का नाटक समझ में नहीं आता। खुद ही चप्पल तोड़ते हो और फिर खुद ही जुड़वाने के लिए उस मंगू के पास भेज देते हो।

सेठ को चप्पल तोड़ने में सफलता मिल चुकी थी। उसने टूटी चप्पल रामधन को थमाई और रहस्य की परतें खोली। देख रामधन, जिस दिन मंगू के पास कोई ग्राहक नहीं आता उस दिन चप्पल तोड़ता हूँ क्योंकि मुझे पता है मंगू गरीब है, पर स्वाभिमानी है। मेरे इस नाटक से अगर उसका स्वाभिमान और मेरी मदद दोनों शर्मिंदा होने से बच जाते हैं तो क्या बुरा है। आसमान साफ था पर रामधन की आँखों के बादल बरसने को बेकरार थे।

दुर्ग-छ.ग.। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ सुखी समाज' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए विधायक अरुण वोरा, उद्योगपति कमल रूंगटा, सीनियर एडवोकेट रामपाटणकर, ब्र.कु. रीटा तथा ब्र.कु. रुपाली।

तासगांव-महा.। स्वामी रामानंद भारती विद्यामंदिर के प्राचार्य चव्हाण सर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. वैशाली, टीचर्स व स्टाफ।

चन्द्रपुर-महा.। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. में 'राजयोग से खुशहाल जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दीपक, सीनियर मैनेजर विनोद घई, डेप्युटी मैनेजर प्रशांत उराडे एवं ऋषभ फौजदार, एक्ज़ीक्युटिव मैनेजर तथा ड्राइवर्स।

जबलपुर-नेपियर टाउन। कैंसर से जंग जीते भाई बहनों के सम्मान समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. श्याम रावत,कैंसर रोग विशेषज्ञ,मेडिकल कॉलेज, नवनीत सक्सेना,डीन,मेडिकल कॉलेज, डॉ. दीपक साहू,सचिव,इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, ब्र.कु. भावना, डॉ. राजेश जैन,असिस्टेंट प्रोफेसर,कैंसर विभाग,मेडिकल कॉलेज तथा प्रो. डॉ. लक्ष्मी सिंगोतिया।

सीतापुर-उ.प्र.। 'सकारात्मक चिंतन द्वारा तनावमुक्त' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बिज़नेसमैन नीरज जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. भगवान तथा ब्र.कु. रश्मि।

राजूला-गुज.। अल्ट्रा टेक सीमेंट कंपनी में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए कंपनी के यूनिट हेड त्रिपाठी जी। साथ हैं ब्र.कु. अनु, ब्र.कु. सरोज तथा ब्र.कु. संजीव।

दुर्ग-छ.ग.। प्रस्तावित निर्माणाधीन आनंद सरोवर बघेरा फेज वन गृह प्रवेश के समय रिबन काटते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा,माउंट आबू, इंदौर ज़ोन क्षेत्रिय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी तथा ब्र.कु. रीटा। साथ हैं अन्य ब्र.कु.भाई-बहनें।

अबोहर-पंजाब। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू द्वारा मालती ज्ञान पीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका अनामिका बंसल को सेवाकेन्द्र पर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पलता। साथ हैं लेखक परिषद के अध्यक्ष राज सदोष जी। इस मौके पर मालती ज्ञान पीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका नवजोत कौर तथा प्राचार्य मोहन लाल कुदाल को भी सम्मानित किया गया।

राजगढ़-म.प्र.। गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रमेश सक्सेना, रामबाबू शर्मा, शिव नागदेव, ब्र.कु. मधु व अन्य।

जीवन के तमस को खत्म करें

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

जीवन एक यात्रा है, जो बाहरी तथा अंतर्जगत में अलग अलग तरह से गतिशील होती है। इस यात्रा के हम सभी सहयात्री हैं, जो अपने प्रेम, शांति तथा इसके विपरीत ईर्ष्या और नफरत से प्रभावित होकर यात्रा करते हैं। जो उपरोक्त दो बातों से प्रभावित होते हैं, वे थोड़ा तो चलते हैं ठीक, लेकिन जिनकी यात्रा ईर्ष्या और नफरत से भरी है, वे यात्री सदा दुःखी रहते हैं।

दुनिया में भी कहा जाता है कि जो आसक्ति से बंधा हुआ इंसान है, वो कहीं भी निस्पक्ष निर्णय लेने में असमर्थ है। जहां भी प्रेम बहुत ज़्यादा है या फिर नफरत बहुत ज़्यादा है, दोनों स्थानों पर व्यक्ति मात खाता है। और ऐसे में बाह्य जगत में तो हम चल भी पाते हैं, लेकिन अंतर्जगत में हमें यात्रा कष्टकारी लगती है। हमें उन्नति फील नहीं होती, उसमें ठहराव नज़र आता है। और ठहराव ऐसा है कि आज तक भी हम अपने नज़रिये को न बदल पाने के कारण इस यात्रा में आगे ही नहीं बढ़ पा रहे हैं। आसक्ति की डोर हमें चारो तरफ से ऐसा बांधती है कि हम हिल नहीं सकते। अध्यात्म में शायद ये बात समझ में आ जाये, लेकिन दुनिया में तो कहा जाता है कि जो व्यक्ति कहीं पर मृत्यु को प्राप्त होता है, तो जिस घर में या जिस परिवार में रहता है, उसमें जो संस्कार वो लेकर जाता है, उस संस्कार के कारण फिर से वो उसी परिवार के आस पास उन्हीं आसक्तियों के कारण दोबारा पैदा हो जाता है। आज हम कोई भी कर्म करते हैं, चाहे अच्छा करें, या बुरा, हर कर्म राग और द्वेष के आधार से ही होता है। अगर राग के आधार से है, तो भी आप उसके परिणाम से खुश होंगे, लेकिन थोड़ी देर बाद दुःखी हो जायेंगे, क्योंकि आपको वैसा ही परिणाम हमेशा चाहिए। अगर द्वेष से किया तो आप उस परिणाम से कभी खुश नहीं होंगे। तो आप सोचिए कि आपका अंतर्जगत कितना परेशान रहता है। वो सबकुछ कर रहा है दुनिया में दिखावे के लिए, लेकिन रात को उसे नींद ही नहीं आती, क्योंकि या तो वो कर्म राग से किया या द्वेष से किया। इसलिए मेडिटेशन में ये बात हमेशा सिखायी जाती है कि ध्यान लगाना ज़्यादा ज़रूरी नहीं है, बल्कि जहाँ ध्यान आपका लगा हुआ है, उसको हटाना अधिक ज़रूरी है। ऐसा नहीं है कि जहाँ आपकी आसक्ति है, उसके लिए आप पुण्य का कार्य करेंगे, वहाँ भी नैतिकता को ताक पर रखकर, अपने विवेक को मारकर गलत कर ही देते हैं, और जहाँ द्वेष है, वहाँ तो गलत ही हो रहा है। विवेक सम्मत कर्म के लिए हमें राग और द्वेष से ऊपर उठकर कर्म करना सीखना पड़ेगा। हम सभी जीवन को यदि किसी शर्त के बिना जीना शुरू कर दें, जिसमें परिणाम कुछ भी हो, लेकिन कर्म हम सिर्फ इसलिए करें, क्योंकि हम उस कर्म को प्यार करते हैं। तो कर्म का प्रभाव राग द्वेष से ऊपर उठकर आपको मिलेगा, इसको कहते हैं न्यूट्रल होगा और आप खुशी खुशी जीवन व्यतीत करेंगे। हम आपको बतायें कि हमारा ज्ञान योग इसी बात पर केन्द्रित है कि हम कोई भी कर्म आसक्ति से ना करें, नहीं तो थकावट होगी। इस थकावट से निकलने का सिर्फ एक माध्यम है, वो है समझ कि मैं कर्म इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं कर्म को प्यार करता हूँ, इसीलिए आप ये नहीं कहो कि मैं ड्यूटी कर रहा हूँ। नहीं तो हमेशा कर्म से दुःखी रहेंगे। तो जीवन के तमस को खत्म करने के लिए विवेक सम्मत कर्म करो।

पांच रास्तों से अशांति का प्रवेश होता है

चिकित्सा निदान तब ही कर सकती है जब रोग ठीक से पकड़ में आ जाए। अंदाजमार इलाज बेवक्त मुसीबत या मौत को निमंत्रण देने जैसा है। इसलिए समझदार डॉक्टर पहले रोग और उसके कारण को पकड़ता है, फिर निदान के लिए इलाज शुरू करता है। हमारे जीवन में एक बीमारी होती है अशांत रहना। जिन्हें शांति की तलाश हो वे सबसे पहले अशांति को समझें। ऋषि मुनियों ने कहा है कि अशांति

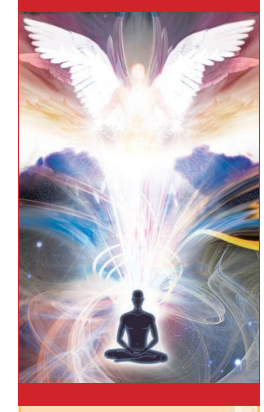

को जानना ही शांति का प्राप्त होना है। बहुत गहरी बात बड़ी सरलता से कही गई है। कम से कम अपनी अशांति और उसके कारण को तो जान जाइए। **पांच रास्तों से इंसान के जीवन में अशांति का प्रवेश होता है - असंतोष, अपूर्ण इच्छा, अधिक चाहत, आवेश और अहंकार।** संतोष तो आजकल किसी को रह ही नहीं गया। जिसे देखो वह कहीं न कहीं असंतुष्ट नज़र आता है। इसके बाद एक होती है अपूर्ण इच्छा। मिल गया, भोग लिया, फिर भी अपूर्णता...। उसके बाद अधिक चाहत..। और मिल जाए.., और मिल जाए.. इससे भी अधिक अशांति आती है। अरे, कहीं तो संतुष्ट होकर रुकना पड़ेगा, लेकिन चाहत के मामले में कोई रुकना ही नहीं चाहता। जब ये तीनों बातें ठीक से नहीं होती हैं तब आता है आवेश, और यदि इन सबसे पार पड़ जाए तो अंहकार प्रवेश कर जाता है। कई बार तो देखते हैं कि भले लोग भी अहंकार के शिकार होकर अशांत हो जाते हैं। तो इन पांच रास्तों से अशांति आने को तैयार है। सावधान हो जाएं और इन पर नियंत्रण पा लें तो शायद अशांति आप तक आने से पहले अपना रास्ता मोड़ लेगी।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

जबलपुर-सिविल लाईन। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पार्षद कमलेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।

ये समय है परमात्म प्यार और मदद के अनुभव का

प्रश्न : लाइफ में कुछ प्रॉब्लम आने पर पति ही मदद करते हैं बाबा नहीं, ऐसा आपको अनुभव होता है?

उत्तर : ये आपका भ्रम है बहन। निराकार बाबा अपने बच्चों की मदद किसी साकारी द्वारा ही तो करवायेंगे ना। जबकि आपने खुद बताया कि पति आपसे नाराज़ रहते हैं, फिर भी मदद करते रहते हैं तो ये बाबा की मदद ही है, जो नाराज़ आत्मा भी मदद करने को बन्धायमान रहती है।

प्रश्न : कुछ परिस्थिति में बाबा की मदद का अनुभव नहीं होता?

उत्तर : बाबा को हम बच्चों के रहे हुए कार्मिक अकाउंट भी तो पूरे करवाने हैं ना। क्या बाप चाहेगा कि हम बच्चों को धर्मराज की कड़ी सजा खानी पड़े? इसलिए हर बार कोई चाहे कि बाबा की प्रत्यक्ष मदद का अनुभव हो तो शायद ये सही नहीं है। और परिस्थिति में ही तो हमारी स्व स्थिति का संज्ञान हमें होता है कि हमारी ज्ञान युक्त, योगयुक्त, धारणायुक्त अवस्था कहाँ तक परिपक्व हुई है, कहाँ तक हम बच्चे बाप और ड्रामा में निश्चयबुद्धि बने हैं।

ड्रामा कल्याणकारी है। हर अकल्याणकारी सीन के पीछे भविष्य का बेहद का कल्याण छिपा हुआ है। इसलिए कभी किसी परिस्थिति में बाबा की प्रत्यक्ष मदद का अनुभव ना हो रहा हो, तो उस परिस्थिति को अपनी स्व स्थिति से पार करें। 3 साल के बच्चे चलने लायक हो जाते हैं इसलिए बाबा भी बीच बीच में हमारी अंगुली छोड़कर हमें चलना और दौड़ना सिखा रहे हैं। इसलिए कभी भी दिलशिकस्त हो बाप और ड्रामा पर अनिश्चय ना करें। बाप कल्याणकारी है तो संगमयुग भी कल्याणकारी है।

प्रश्न : प्यूरिटी में इतनी ताकत है तो ब्राह्मण जीवन में इतनी प्रॉब्लम क्यों?

उत्तर : प्यूरिटी में बहुत ताकत है। भक्तिमार्ग में भी दैहिक प्यूरिटी सम्पन्न साधु सन्यासियों के आगे प्रधानमंत्री तक भी नतमस्तक होते हैं। फिर हमारी प्यूरिटी तो स्वयं पवित्रता के सागर परमपिता परमात्मा के डायरेक्शन अनुसार है। इसलिए इसमें अथाह बल तो भरा हुआ ही है। पर क्या आपने सचमुच में प्यूरिटी की ताकत अपने में भरी हुई है? कहीं आपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए तो पवित्रता धारण नहीं की है? क्योंकि अगर पवित्रता धारण किया है तो स्वप्न में भी बाप या ड्रामा पर अनिश्चय हो नहीं सकता। किसी भी प्रकार का अनिश्चय होना इम्प्यूरिटी ही है।

प्रश्न : क्या बाबा एक आत्मा को कन्विंस नहीं कर पा रहे हैं?

उत्तर : बाबा कल्प पहले वाली देवताई कुल की आत्माओं को पुनः देवता बनाने के लिए आये हैं। यदि आपके युगल देवताई कुल के होंगे तो उनको ये ज्ञान अवश्य अपनी तरफ आकर्षित करेगा, पर ज्ञान की तरफ आकर्षण उनका तब और भी जल्दी होगा, जब वो आपके पूर्व आचरण में अत्यंत पॉज़ीटिव बदलाव देखेंगे। अगर उनको बदलाव नहीं दिखेगा तो संभवतः उनका इस ज्ञान मार्ग की तरफ आकर्षण ना हो या बहुत बाद में हो।

प्रश्न : जो प्यूरिटी की धारणा नहीं कर रहे, वे आराम से सेंटर आ और जा रहे हैं और जो धारणा कर रहे हैं उन पर ही इतनी आपदाएं क्यों?

उत्तर : बाबा के दो प्रकार के बच्चे हैं - सगे और लगे। जो धारणाओं में ना चलने के बाद भी आ-जा रहे हैं, मान-सम्मान पा रहे हैं, ऐसी आत्मायें बाद में प्रजा में भी नीचे का पद पायेंगी। इसलिए ऐसी आत्माओं को देखकर इन पर रहम आना चाहिए ना कि ईर्ष्या।

हम माया के 63 जन्मों के आसामी हैं। क्या माया इतनी जल्दी हम पर अपना आधिकार छोड़ देगी? नहीं ना। इसलिए माया धारणावान हर ब्राह्मणों के सम्मुख अनेकों परिस्थिति लाकर उन्हें ज्ञान मार्ग से डिगाने का प्रयत्न करती है। और आत्मायें माया के इस रूप को भली भांति जानकर शिव बाबा से और भी कम्बाइन्ड होती जाती हैं, जिससे अंत में माया हारकर उन बच्चों के आगे समर्पण कर देती है।

इसलिए बहन, आपदाओं से ना घबराएं। पर इन आपदाओं के पहाड़ के आगे जो सुखमय दुनिया का राज्य भाग्य मिलना है, उसको स्मृति में रख और स्वयं को महावीर समझ, इन आपदाओं रूपी पहाड़ को छलांग लगाकर पार कर लें।

ध्यान दें :- हम प्यूरिटी आदि धारणाएं, जो मरजीवा ब्राह्मण जीवन के लिए अपरिहार्य है, करते हैं तो ऐसा कदापि ना समझें कि हम बाबा पर कोई एहसान कर रहे हैं। बल्कि ये कहना सत्य होगा कि बाबा ने हमें अपना बनाकर हम पर बहुत एहसान किया है। इसलिए सामने आने वाली परिस्थितियों को अपनी स्व-स्थिति में स्थित रह कर पार करें। बाबा और ड्रामा पर दोषारोपण करने से कुछ नहीं होगा। स्वयं को महारथी समझें क्योंकि बाबा ने बताया हुआ है कि महारथी से ही माया रुस्तम से रुस्तम होकर सामना करेगी। और बाबा ने ये भी बताया हुआ है कि परिस्थिति आती ही है। हमें अनुभवीमूर्त बनाने। अगर परिस्थिति नहीं आयेगी तो हमें अपनी वर्तमान अवस्था का भान नहीं होगा और जिससे फिर उस अनुसार पुरूषार्थ ना कर पाने के कारण अंत समय हम माया से हार खा लेंगे।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'
24x7 Ad. Free Value Based Channel
Peace of Mind CHANNEL
TATA SKY 1065 | airtel digital TV 678
VIDEOCON d2h 497 | dishtv 1087
+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in

अनुभव

परमशक्ति का परम जादू

जब हम चारो ओर से बेबस हो जाते हैं, मूंझ जाते हैं, जब सारे स्थूल सहारे दूर दूर तक नहीं दिखाई देते, तब वही सर्वोदया ही हमारा एक सहारा होता है। पर वो मदद भी तब करता है, जब हम भी उसको यथार्थ रूप में जानें और उसकी शक्तियों को पहचानें। ऐसा ही हुआ मेरे साथ। जब मैं अकेला था, कोई मेरे आस पास नहीं था। मैंने परमात्मा को याद किया और सर्वोदया, रहमदिल दवा लेकर मेरे पास आ गया और मेरे हाथ को शीतलता का मरहम लगा गया। ये परमात्म शक्ति जादू से कम नहीं है। ऐसा कहना है हरिवंश बर्रोही जी का। उन्हीं का अनुभव उन्हीं के शब्दों में...

ब्र.कु. हरिवंश बर्रोही,
गोरखपुर, उ.प्र.

जब जब उन लम्हों के बारे में सोचता हूँ कि कैसे वन्डरफुल जादूगर बाबा ने मेरे ज़ख्मों पर अपनी ममता का मलहम लगाया तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। बात कुछ यूँ है कि एक बार मेरी नाइट ड्यूटी चल रही थी। सुबह नौ बजे मैं ड्यूटी पूरी करके घर आया। दिल में आया कि आज पूरी सब्जी बनाऊँ। घर में मेरे सिवाय कोई अन्य व्यक्ति नहीं था।

मैंने सब्जी काटकर रख दिया। आटा गूंथकर पूरी बनाना शुरू कर दिया। कराही में मैंने ज़्यादा तेल डाल दिया था कि जल्दी से हो जायेगा। पूरी बनने के बाद मैंने सोचा कि कराही में थोड़ा तेल सब्जी के लिए रखकर, बाकी तेल निकाल लेता हूँ। इसके बाद मैंने एक कटोरे में करछी से तेल निकालने लगा और निकाल भी लिया। पता नहीं उस समय क्या गड़बड़ी हुई कि वो उबलते हुए तेल का कटोरा मेरे बायें हाथ पर पलट गया। ऐसा लगा कि दहकते हुए अंगारों के बीच मेरा हाथ पड़ गया हो। तुरन्त मैंने बाबा को याद कर कहा कि बाबा अभी मैं क्या करूँ? ऐसे महसूस हुआ जैसे इसी वक्त चमड़ी हाथ से निकल अलग हो जायेगी। इस हालत में मैं क्या कर पाऊँगा? घर में कोई दूसरा व्यक्ति तो है नहीं, बाकी काम कैसे होगा? बाबा ने टचिंग दी। मैंने योग करना शुरू कर दिया। वहाँ नारियल के तेल की एक छोटी सी बाल्टी रखी थी, जिसमें तेल की कुछ बूंदें थीं। अचानक मेरी नज़र उस पर पड़ी। इन चन्द बूंदों को मैंने हाथ पर लगाया। साथ ही बाबा को दिल से याद कर ही रहा था।

मेरे घर के बगल में एक डॉक्टर थे। मैं उनके पास गया और सारी बात बताई। डॉक्टर ने उसका कुछ उपचार करने को कहा। मैं तो बाबा की याद में ही था। फिर डॉक्टर ने वहाँ बैठे एक पेशेंट द्वारा मेडिकल स्टोर से एक ट्यूब मंगाया। डॉक्टर ने कहा कि फिलहाल यह ट्यूब लगाइए। हाथ को ठंडा करेगा। फिर कमाल कहूँ कि क्या कहूँ उस जादूगर बाबा की, कि ठीक उसी वक्त ट्यूब लगाये बिना ही मेरा हाथ शीतल होने लगा। बाबा के ममता की मलहम को महसूस कर दिल गद्‌गद् हो उठा। बस एक ही संकल्प बार बार उठने लगा कि मीठे बाबा शुक्रिया, तेरा बहुत बहुत शुक्रिया। दिल में खुशियों का झरना बहने लगा। उसी रूहानी नशे और फक्र से मैंने कहा कि डॉक्टर साहब, देखा बाबा की कमाल! मेरा हाथ शीतल होने लगा है। और ये है राजयोग पैथी। ये बेमिसाल है। इसके सामने कोई पैथी है ही नहीं। और डॉक्टर यह दृश्य देखकर अवाक रह गये ।

फिर मैं घर पर आया, उसके बाद मैंने सब्जी पकायी। कुछ क्षण पहले जिस हाथ की हालत देखकर भीतर तड़पन थी, हाथ अंगारे की तरह जल रहा था, वही हाथ सुप्रीम सर्जन की कमाल से शीतल होता चला गया। बाद में बाबा की याद में भोजन किया। फिर उस मददगार बाबा के गीत गाते और शुक्रिया करते करते सो गया। आपको भी यह जानकर आश्चर्य लगेगा कि मैं ठीक नौ घंटे गहरी नींद में सोया। कुछ खबर ही नहीं थी उस तकलीफ की। सोकर उठा तो फिर अपने उन्हीं हाथों से कपड़े भी धोये।

मैंने योग इस प्रकार से किया

सर्वशक्तिवान बाबा की शक्तियों की लाल रंग की किरणें मुझ आत्मा में समाती जा रही हैं और मुझ आत्मा से निकलकर मेरे जले हुए हाथ पर पड़ रही हैं और हाथ पर पड़ने पर ये किरणें मलहम बनती जा रही हैं और इससे मालिश करने पर हाथ ठीक होता जा रहा है।

जिस समय मैं योग कर रहा था, उस समय मैं दूसरे हाथ से जले हुए हाथ पर बिल्कुल आहिस्ते आहिस्ते हाथ फिरा रहा था, जैसे कि मलहम से मालिश कर रहे हों। हाथ जलने के बाद उसे शीतल होने में करीब एक घंटा लगा होगा।

सारे ही कल्प का सबसे हसीन साथी बाबा है। ऐसा साथी न भूतो न भविष्यती। जो कहीं भी, कभी भी, किसी भी रूप में, कैसी भी परिस्थिति में निःशुल्क मदद करने के लिए तैयार रहता है। ऐसे हसीन साथी को तहे दिल से अनन्त कोटि शुक्रिया।

प्रिय पाठकों, मैं तो आप लोगों को यही कहना चाहूंगा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में जाकर, राजयोग की शिक्षा लेकर, परमात्मा से जिगरी रिश्ता जोड़कर हर कदम उसकी मदद का अनुभव करते हुए, अपने तकदीर की लकीर को बुलंदियों पर पहुँचाएं।

भवानीगढ़-पंजाब। पूर्व विधायक प्रकाश चंद गर्ग व उनकी धर्मपत्नी कृष्णा गर्ग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजीन्दर कौर तथा ब्र.कु. उषा।

गोधरा-गुज.। 'महिला आध्यात्मिक सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए डॉ. कनकलता,हेड एवं मुख्य वैज्ञानिक,कृषि विज्ञान केंद्र, भानुमति बहन, कोऑर्डिनेटर,ग्राम विकास केंद्र, डॉ. दीपिका शाह। एक अन्य तस्वीर में कार्यक्रम के दौरान प्रवचन करते हुए डॉ. कनकलता।

फतेहगढ़-उ.प्र.। 'मधुमेह शिक्षा शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा। साथ हैं जी.एस.टी. अति. निदेशक ज्योति धारीवाल, डॉ. वलसलन नायर,मा.आबू, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

जयसिंहपुर-महा.। 'दिव्य नगरी स्लम सेवा योजना' का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. रानी तथा स्थानीय समाज सेवक एवं विशिष्ट लोग।

चोपड़ा-महा.। 'पासवर्ड फॉर हैप्पीनेस' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता। ध्यान पूर्वक सुनते हुए डॉक्टर्स, व्यापारीगण, टीचर्स, रोट्री क्लब मेम्बर्स तथा अन्य।

आदर्श नगर-रुड़की। ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला के नवनिर्मित भवन का फीता काटकर उद्‌घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,मा. आबू। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी चन्द तथा अन्य।

केशोद-गुज.। 'दिव्य संस्कार घडतर प्रोजेक्ट' के अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस के कार्यक्रम पश्चात् समूह चित्र में शहर के अग्रणी जीतुभाई लुक्का, नाथाभाई गजेरा, ब्र.कु. अल्पा, ब्र.कु. गीता तथा श्री वासाबाडी पे सेन्टर स्कूल के बच्चे।

रतलाम-डोंगरे नगर। सात दिवसीय 'संस्कार समर कैम्प' के समापन समारोह में बच्चों को पुरस्कार व सर्टिफिकेट प्रदान करने के पश्चात् समूह चित्र में बच्चों के साथ जिला शिक्षा अधिकारी अमर कुमार वरधानी, उत्कृष्ट हाईयर सेकेण्ड्री स्कूल की प्रिन्सीपल डॉ. पूर्णिमा शर्मा, कृषि मंडी अध्यक्ष प्रकाश भगोरा, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

कटनी-गोपाल नगर(म.प्र.)। सावन मास में हरियाली तीज के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में प्रतिभागियों के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भगवती तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

पुणे-रविवार पेठ। योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोग मेडिटेशन कराते हुए ब्र.कु. शिल्पा।

राजयोग शिक्षिकाओं ने की गहन साधना

शांतिवन। चार दिवसीय 'स्व उन्नति साधना शिविर' के कार्यक्रम में देश भर से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की राजयोग शिक्षिकाओं ने शांतिवन में की गहन राजयोग साधना। इस मौके पर संयुक्त प्रशासिका दादी रतनमोहिनी सहित वरिष्ठ राजयोगिनी बहनों ने किया मार्गदर्शन।

'रेज्युवनेट-इन्नोवेट-इन्टेग्रेट...' विषय पर सफल सम्मेलन

अध्यात्म के बिना विज्ञान अधूरा

ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. अंबिका व ब्र.कु. मृत्युंजय के साथ दीप प्रज्वलित करते आमंत्रित महानुभाव।

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के स्पार्क विंग द्वारा अध्यात्मविदों के लिए आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए नीति आयोग सदस्य,जे.एन.यू. कुलपति पद्मविभूषण डॉ. वी.के. सारस्वत ने कहा कि विज्ञान व अध्यात्म एक दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान भौतिक जगत में सत्य पर विचार करता है, जबकि आध्यात्मिकता हमारे मनोभावों व विचारों पर शोध करती है।

प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. आशा ने कहा कि आध्यात्मिकता के विज्ञान को समझना अति आवश्यक है। आत्मानुभूति के बाद ही मनोवैज्ञानिक तरीके से जीवन मूल्यों का विकास होने लगता है। भौतिकता व आध्यात्मिकता को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

डी.आर.डी.ओ. अधिकारी डॉ. सुशील चंद्र ने राजयोग के विभिन्न विषयों पर किए गए अनुसंधान की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि राजयोग के माध्यम से विभिन्न उपेक्षाकृत परिस्थितियों में भी मानसिक स्थिति को स्थिर रखा रखा जा सकता है। सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रो. डॉ. रमेश गौतम ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से प्रशिक्षित राजयोग में भारतीय प्राचीन संस्कृति झलकती है। ये भारत का प्रसिद्ध प्राचीन राजयोग है।

प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. अंबिका ने कहा कि ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में आत्मसात करने के लिए अध्यात्म के सिद्धान्तों के अनुरूप स्वयं के संकल्प, बोल व कर्म को अनुशासित करना होगा।

संगठन के शिक्षा प्रभाग अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से विश्वविद्यालयों व कॉलेजेस में थॉट लाईब्रेरी की स्थापना की जा रही है। जहाँ आध्यात्मिकता के विभिन्न विषयों पर अनुसंधान किये जायेंगे।

डॉ. जयश्री ने कहा कि मन में सकारात्मक ऊर्जा मौजूद है, लेकिन उसका बेहतर तरीके से सदुपयोग नहीं करने से मन में उलझन की स्थिति बनी रहती है। ग्यारह वर्षीय सोशल इनोवेटर हिमांग ने कहा कि अध्यात्म से हमारी सकारात्मक सोच सुदृढ़ होती है, जिससे नये एवं संतुलित आविष्कार करने में मदद मिलती है। जिसकी बदौलत मैंने रोबोटिक्स से शुरुआत कर राष्ट्रीय स्तर पर चैम्पियन बनने तक ही यात्रा को सहजतापूर्वक तय किया।

मुख्यमंत्री ने ली ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी

ब्रह्माकुमारी विजयलक्ष्मी ने संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं से कराया अवगत

डूंगरपुर-राज.।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के समाज सेवा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने ली जानकारी।

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ ब्र.कु.विजयलक्ष्मी, मंत्री श्रीचंद कृपलानी, ब्र.कु. महावीर, हेम सिंह व अन्य।

राज्य सरकार की ओर से डूंगरपुर में आयोजित जनसंवाद कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती राजे ने ब्रह्माकुमारी संगठन की डूंगरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी ब्र.कु. विजयलक्ष्मी को मंच पर आमंत्रित कर संगठन की ओर से की जा रही सेवाओं की जानकारी चाही। जिस पर ब्रह्माकुमारी विजयलक्ष्मी ने भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, आध्यात्मिकता द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण, पौधारोपण, ज़रूरतमंदों को समय-समय पर मूलभूत सुविधायें मुहैया कराने, गाँव-गाँव में चिकित्सा शिविरों के ज़रिए मरीजों की सेवा, नशामुक्ति अभियान, बाढ़ पीड़ितों को मदद करने समेत विभिन्न सामाजिक सेवाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम में स्वायत्त शासन मंत्री श्रीचंद कृपलानी, डूंगरपुर विधायक, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, महावीर इंटरनेशनल क्लब, विश्व हिंदू परिषद, वनवासी कल्याण परिषद, भारत विकास परिषद, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, पेंशनर्स समाज, गणमान्य वरिष्ठ नागरिकों समेत बड़ी संख्या में अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर समाजसेवा सदस्य ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, ब्र.कु. महावीर, हेम सिंह आदि ने मुख्यमंत्री को बह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में आने का भी निमंत्रण दिया।

हमारी गलत जीवनशैली बीमारियों का मुख्य कारण

कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में कर्नल सती, प्रो. ई.वी.स्वामीनाथन, ब्र.कु. रीटा व अन्य।

उदयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन ने अधिक बीमारियों का मुख्य कारण हमारी गलत जीवनशैली को बताया। उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि सुस्वास्थ्य के लिए अपनी जीवनशैली में नियमित व्यायाम, शुद्ध भोजन और राजयोग मेडिटेशन को शामिल करें। उन्होंने बताया कि जो भी व्यायाम करें, वह बहुत खुशी व आनंद के साथ करें, जिससे हमारा मस्तिष्क हैप्पी हॉर्मोन स्रावित करता है जो हमारे स्वास्थ्य को सही रखने में मदद करता है। उन्होंने आगे कहा कि जैसा हमारा अन्न होगा, वैसा ही हमारा मन होगा। तो अन्न का सीधा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। साथ ही उन्होंने कहा कि भोजन बड़े प्यार और सकारात्मक विचारों के साथ करें, ना कि टीवी देखते हुए। अगर भोजन किसी दुःखित घटनाओं के विचार लिये करते हैं, तो भोजन से मिलने वाली शक्ति कम हो जाती है। जैसे शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए व्यायाम करते हैं, ऐसे ही मन को शक्तिशाली बनाने की विधि है राजयोग। राजयोग मेडिटेशन से हमारी एकाग्रता बढ़ती है और हम कोई भी कार्य कुशलता और सहजता से कर पाते हैं।

प्रो. स्वामीनाथन से डेमो के माध्यम से एकाग्रता की शक्ति के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में करीब तीन सौ विद्यार्थियों ने भाग लिया। ब.कु. रीटा ने अंत में सभी का आभार व्यक्त किया।

कैंसरवाइव मलेशिया द्वारा 'द हीलिंग माइंड' कार्यक्रम का आयोजन

मलेशिया-पेटालिंग जाया।

कैंसरवाइव मलेशिया द्वारा 'द हीलिंग माइंड -इमोशनल इंटेलीजेंस टू हील योर हार्ट एंड हेड' विषय पर आयोजित टॉक शो में ब.कु. डॉ. गिरीश पटेल,मुम्बई,इंडिया ने बताया कि किस तरह अपने मन को प्रशिक्षित करने से हम अपने शरीर द्वारा स्वस्थ और सम्पूर्ण रूप से कार्य ले सकते हैं। कैंसर तथा अन्य बीमारियों के दौरान भी हम कैसे अपने स्ट्रेस और इमोशनल डिस्टर्बेन्स को मैनेज कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि (श्री एफ-फेस इट, फुलफिल इट, फ्री इट) के द्वारा बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने कहा कि बीमारियों को कंट्रोल करने के लिए अपनी लाइफ स्टाइल में जो परिवर्तन आवश्यक हों, उसे अवश्य करें। मरीजों के साथ सहानुभूति से पेश आएं, विशेष रूप से केयर गीवर्स और केयर टेकर्स। कार्यक्रम में करीब अस्सी लोगों ने भाग लिया तथा डॉ. पटेल की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हुए उसकी महत्ता को जान अपने जीवन में लागू करने का निर्णय लिया।

स्ट्रेस व इमोशनल डिस्टर्बेन्स को मैनेज करने की विधि बताते हुए डॉ. गिरीश पटेल।

द्वादश ज्योतिर्लिंगम के दर्शन करने उमड़े लोग

एक मास तक मिलेगा इस सुंदर एवं भव्य प्रदर्शनी का लाभ

देवघर-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र द्वारा सरासनी खिजुरिया, कांबरिया पथ देवघर में आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंगम प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन जनार्दन दास,संयुक्त आयुक्त,आयकर विभाग नई दिल्ली द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी पूरे श्रावण मास तक चलेगी। इस प्रदर्शनी में देश भर के ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के कई सेवाकेंद्रों की सहायता ली गई है। ब्रह्माकुमारी संस्था इस प्रदर्शनी से परमपिता शिव बाबा का यह संदेश देना चाहती है कि विश्व परिवर्तन का आधार सिर्फ और सिर्फ राजयोग है और परिवर्तन का समय अब है। विचारों को हम किस प्रकार बदलकर सारी सृष्टि पर स्वर्णिम युग ला सकते हैं ताकि यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाये। जिसका आधार राजयोग है और इसका ज्ञान परमात्मा ने दिया है।

उद्घाटन करते हुए जनार्दन दास,संयुक्त आयुक्त,आयकर विभाग एवं उनकी धर्मपत्नी प्रभा देवी, उमाशंकर चौबे,आयकर अधिकारी तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

इस उद्घाटन के अवसर पर बड़ी संख्या में कांवरिया, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल सेवाकेंद्र समेत, स्थानीय सेवाकेन्द्र के भाई बहनें बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 12th Aug 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं अमर उजाला प्रेस द्वारा मुद्रित।